॥ श्रीजानकीबल्लभो बिजयेते ॥

श्रीस्वामी अग्रदास जी महाराज कृत

अष्टयाम पदावली

संग्रहकर्ता:-

श्रीसीताराम रहस्य विकासक

आचार्य प्रवर अनन्त श्रीस्वामी अग्रदेवजी के वंशावसंत

अनन्त श्रीस्वामी सियाशरणजी महाराज (मधुकर)

तच्चरणारबिन्द भ्रमर

श्रीजानकी शरण मधुकरिया

सं० २०३७

भूमिका

श्री सम्प्रदाय रहस्याचार्य प्रधान श्री अनन्त कोटि श्री स्वामी अग्रदेवाचार्य महाराज के भाव में बिलीन अवस्था में यह परा बाणी से अपने स्वरूपावेश के रंग से प्रगट हुए ये पद हैं। इन वाणियों में प्राकृतिक छन्दों वा मात्राओं का दोषारोपण नहीं हो सकता है। क्योंकि वेद तो-त्रैगुण्य विषय है जैसा कि गीता अध्याय दो श्लोक ४५ में कहा गया है-भाव के अन्दर तुरीयावस्था प्राप्त हो जाने पर फिर आत्म परमात्म साक्षातकार सुख की धारा में जो जो भगवत्लीला दर्शन होती हैं वहीं प्रारब्ध शरीर के जबान से उच्चारण हो जाने पर लोक पावनी अमृत धारा बन जाती है। अन्यथा संसार के अनाथ जीवों को गुरु वर्ग कैसे उद्धार कर सकेंगे ? क्योंकि विपरीत बुद्धि से संसार में मोहित हुए मनुष्यों को भगवत सन्मुख करना आचार्यों की ये ही बाणियों का काम है अज्ञान अन्धकार दुःख मय संसार से निकाल कर ज्ञान प्रकाश आनन्दमय श्रृष्टि में चेतन आत्माओं को ले जाने का गुरुवर्गों के हाथ में यही एक मात्र उपाय है। श्री गोस्वामी जी ने विद्याभिमानियों के अभिमान को चूर करके जीवों को भगवत सन्मुख किया है। और अग्रस्वामी जी ने भगवत सन्मुख जीवन को अपने नित्य प्रीतम के पास का सुख आनन्द दिया है। यही वाणी प्रमाण है। इन अमृत बाणियों का मैने बहुत जगह से संग्रह किया है। परन्तु मुख्य संग्रह मुझे एक बहुत पुरानी प्रति जो कि चिरान स्थान छपरा के महाराज श्री स्वामी जीवा राम (युगल प्रिय)

जी के शिष्य श्री जानकी बिहारी शरण जी का संग्रह किया पुराना लेख जिस में प्राचीन सभी पूर्वाचार्यों के पदों का संग्रह मेरे पास यह पोथी है। जिसको मैं केवल दूर से देखने मात्र के लिये दिखा सकता हूं क्योंकि यह पोथी अति जीर्ण अवस्था में रुई के समान कमजोर कागज हो गया है। यद्यपि इस पोथी का लेखन काल सम्बत १६२८ वि० कार्तिक अमावस्या रविवार का है तो भी अरक्षित अवस्था में मुझे मिली है। अस्तु और भी मैंने जहाँ तहाँ के फैले पदों को विचित्र रूप में भी पाया है सब का संग्रह करके एकत्रित किया है।

इस संग्रह को प्रथम सम्बत २०१५ को श्री सीताराम कृपापात्र बाबू श्री जनकनन्दनी शरण (ईश्वर प्रसादजी) तारानगर जिला चुरु राजस्थान निवासी ने छपाया था, पुस्तक की अधिक आकांक्षा ने फिर से मुझे बाध्य किया तो इस महा मंहगी में भी यह दुबारा तथा अधिक पद संग्रह के रूप में भक्त उपासकों के हाथ में आ रहा है।

सम्वत २०३७ पूष अमावस्या

श्री सीतारामानुरागी रसिक जनों का सेवक—

जानकीशरण मधुकरिया (शौन्दर्यशीला)

श्री चारुशीला मन्दिर; श्री चारुशीला बाग

श्री जानकीघाट, श्री अयोध्या, उ० प्र०, भारत

श्री सीताराम चरण चिन्ह

श्री राम चरण चिन्ह चितु सब बिधि सुख छाजै ।
रघुबर के चरण कमल अंकन जुत निरखु अमल ॥
धारे पद चिन्ह राम संतन हित काजै ।
श्रीराम चरण दाहिन सोइ सीता पद वाम चिन्ह ॥
विंश चारि स्वस्तिकाष्ट कोण श्री बिराजे ॥ १ ॥

हल मूसल सर्प वाण अंबराष्ठ पद्म यान ।
बज्र जब उर्द्ध रेख कल्पवृक्ष छाजें ॥
अंकुश ध्वज मुकुट चक्र सिंहासन दण्ड चमर ।
छत्र पुरुष माला जब दक्षिण पद भ्राजें ॥ २ ॥

गो पद छिति घट पताक जम्बूफल अर्द्ध इन्दु ।
शंख षट कोण त्रय गदा जीव विन्दु राजै ॥
सरजू शक्ति सुधाकुंड त्रिवली मीन पूर्णचन्द्र ।
बीन बेनु धनुष तूण हंस चन्द्रिका ॥ ३ ॥

सीय राम चरणो शुभ चिन्ह अष्ट चालीस नित ।
चितत शिव नारद सनकादिक अहिराजै ॥
श्री राम चरन ध्यान धरत गोपद इव जगत तरत ।
विरति ज्ञान भगति भरत सजत सत समाजै ॥ ४ ॥

श्री रामानन्द सम्प्रदाय रसिक पूर्वाचार्यों के मतानुसार

श्री सीताराम जी के मुख्य अष्ट पार्षद

जै मिथिलाधिप नन्दनी जै अवधेश किशोर ।
जैति चारुशीला अली सकल सखिन शिर मौर ॥

जै जै जै हनुमान श्री श्रीप्रसाद अवतार ।
चारुशिला सर्वेश्वरी तीन रूप निज धार ॥ २ ॥

जै 'श्री सुभगा भरत' तन सेवा समय सुधार ।
'महाबिष्णु' अवतार महि 'सनक' 'सुशीला' चार ॥ ३ ॥

जै 'विमला' अरु 'लक्ष्मणा' 'लक्ष्मण' रूपहुं धार ।
'नारायण' पुनि 'शेष' तन सेवा समय विचार ॥ ४ ॥

जै 'हेमा' 'श्री रिपुदमन' तीन रूप सुख सार ।
दम्पति सेवा सुरुख लखि 'भौमा' 'सुक मुनि धार॥ ५ ॥

सूर्य अंश 'सुग्रीव' 'शिव' 'शंकर्षण' अवतार ।
जै 'अतिशीला' प्यारी पिय सु 'वरारोहा' धार ॥ ६ ॥

जयति 'विभीषण' 'भीषणा' विश्वमोहनी, शक्ति ।
'पद्मसुगन्धा' लाड़िली लाल प्रिया वर भक्ति ॥ ७ ॥

'भूशक्ती' भूधरण की सुलोचना सिय प्यारि ।
जयति 'जृम्भणा' 'हरिप्रिया' 'जाम्बवान' तनुधारि ॥ ८ ॥

जयति क्षमावति क्षेमदा 'क्षेमा' क्षमावतार ।
अंगद विद्या वारिधर 'वागीशा' वर चार ॥ ९ ॥

वसु पारषद रसाल हिय रसिकन आंख सुचार ।
लखै लखावव लक्ष लख अक्ष आंख अधिकार ॥ १० ॥

॥ इति ॥

श्री अग्रस्वामी अष्टयाम पदावली

प्रातः उत्थापन

बाजत कोशलेश जु के द्वार ।
घनरव । दुन्दुभि शंख सहनाई रैन रही घड़ि चार ॥
उठो सखी अब मज्जन करिये सजि सोरहो शृँगार ।
भूषण रचि अंग धारि कै चलिये चारुशिला दरबार ॥
महल-महल प्रति जागि उठी सब निज-निज सौंज सम्हार ।
रसिक अली परिकर स्वामिनि ढिंग बैठत करिके जुहार ॥१॥

॥ भैरव राग ॥

यामिनि याम रही बड़भागी श्री जानकि सखि जागी ॥
गाय उठी भैरव सुराग सब पिय प्यारी गुण पागी ॥
मुख मज्जन अस्नान अंग अंग सजहि शृँगार सोहागी ॥
हिलि मिलि सर्वेश्वरी महल चलि जाय जाय पग लागी ॥
सेवा समय सजग ललना गण युगल केलि पट तागी ॥
सखियन सहित चारुशीला अलि मन्द-मन्द गति वागी ॥
जाय महल पहुँची ज्ञाना अलि उत्थापन पद रागी ॥२॥

चली सखि रंग भवन को जात ॥
परिकर स्वामिनि संग विराजत गज गामिनि के ब्रात ॥
नेह भरी रस छाकी अखियां दर्शन को अकुलात ॥
रसिक अली पिय प्यारि रूप गुण गावत पुलकित गात ॥३॥

卐 卐 卐

श्री चारुशीला लक्ष्मणा विमलातिशीला-
हेमा क्षेमा वरारोहा शुभगा सुपद्मगन्ध है।
प्रातकाल करि शृँगार लीन्हे सखि थाल साज-
मंगल सुभद्रव्य तामें उठत सुगन्ध है ॥
यूथ सु अनेक खास गान तान रस प्रकास-
चले जात पुलक गात लाज गति गयन्द है।
पहुँचे सब हेम महल पलका समीप टहल-
दम्पति सुख हेरि अग्र माच्यो रस जंग है ॥४॥

卐 卐 卐

शैन भवन के द्वार प्रातही चारूशिला सखि जन्त्र बजावैं।
रूप विलाश बिनोद विविधि सुख सहचरि हरषि २ हियगावैं।
सुनि मृदुगान मनोहर बचननि सारिकासिय रघुबरहि जगावैं।
जागे मेरेप्यारे सियावर रसिक अली दर्शन अब पावैं ॥५॥

卐 卐 卐

भोर भयो जागिय पिय प्यारी रघुवर जनक दुलारी ॥
उदित अरुण दुतितिमिर विगत निशि मुदित नदत नभचारी।
रैन शैन वश नींद नैन लखि मुख दुति दिव्य तिहारी ॥

चौरी चन्द्रस उड़गण दीपक छोड़त सो भय भारी ।
सौरभ स्वास नासिका मुखगत ताहि लेन अलि भारी ॥
गुन्जत पुन्ज-पुन्ज कुन्जन में सुमन सुगन्ध बिसारी ।
चित गति चिन्तक चतुर चारिका सबविधि सौंज सुधारी ॥
निज-निज थल ठाढ़ी गुन गावत सेवन शील अपारी ।
कोटिन उमा रमा सचि शारद अपर अमित सुर नारी ।
निज-निज लोकनि ते सब आईं करन उपायन धारी ॥
सुर गन्धर्व यक्ष किन्नर नर पन्नग सिद्ध कुमारी ।
रमणी रघुनन्दन तब सिय ढिग आई करन जुहारी ॥
मोर चकोर हंस पारावत सारस युग सुक सारी ।
शैनभवन दिशि चितई रहे मुख वचन कहत पिय प्यारी ॥
रसिक अली मृदु गान सुनत पिय जागि जगावत प्यारी ।
मृदु कर कंज केश कबरी के बन्धन कशत विहारी ॥६॥

卐　卐　卐

सोइ गइ प्यारी भोर भयो जगावत प्रीतम प्यारो ।
कर सरोज फेरत मृदुगातन मुद्रित नैन निरखि सुख भारो ॥
लै लै कर कर धरत हीय पर नेह बढ़ो उर अधिक उदारो ।
कीजै रस बतिया उठि प्यारी सोइ रही का नैन उघारो ॥
प्रीतम बचन बाल रविकर छुइ प्यारी दृग सरोज उजियारो
बदन सरोज विलोकि उठी हंसि प्यारो हंसिकह वसन सम्हारो॥
ले दर्पण ढिग आइ अली इक वदन विलोकत रति सुखसारो ।
श्रीचारुशिला उत्थापन आरति करत रसिक उर मोद अपारो ।७।

श्री अग्रपदः रागललित–

रजनी अल्प राम उठि बैठे सोइ गई सीता ह्वै गयो भोर।
बार बार विधु बदन विलोकत मानो पीवत सुधा चकोर॥
हरे हरे चुम्बत चमकन डर कर सों चिबुक चारु टकटोर।
जागि परी जानकी ताहि छिन आलस पगे नयन की कोर॥
बहुरि अंक आरोपि पिया को गौरस्याम शोभित इक जोर।
अग्रअली ऐसी छबि छाड़े धिक जाके आवै उर और॥८॥

卐 卐 卐

गावति श्रीप्रसाद सिय प्यारी छबि छकि मतवारी।
बीणा बजावति मधुरे स्वर सों मधुर ताल सुठिकारी॥
सुनि जागे पिय प्यारी प्रीतम आलस भरे खुमारी।
त्रिनदुकूल बैठे पलँगा पर काहू सुधि न सम्हारी॥
प्यारी लट छुटि सोह उरज पर जनु नागिन दुतिकारी।
अग्रअली निरखति यह छबि को तन मन धन बलिहारी॥६॥

卐 卐 卐

भरि अनुराग परस्पर दोऊ अधरामृत रस पियत खिलारी।
दन्त नखोंछत दोउ अँग झलकत मनुयुग द्विरद बैठि लड़िभारी॥
कबहुँ प्रेमभरि लपटि झपटि दोउ करि विपरीत क्रियारसकारी।
प्रीतम प्यारी को कह प्यारे प्यारी प्रीतम को कहि प्यारी॥
चारुशिला रुखपाय अग्रअलि यह सुख झाँकति झांझरि द्वारी।
जाहि न यहसुख निरख्यो नैनन जप तप योग व्यर्थ श्रमकारी॥१०॥

मंगल करनी छवि चित्त हरनी रंगमहल राजत दोउ लाल।
आलसभरि ऐंठात परस्पर लपटत दोउ उमगत छवि जाल ॥
श्रीप्रसाद श्रीचारुशिला जू दोउ दिशि दम्पति पकड़त बाल।
अग्र नवल अनुराग परस्पर रसमाते निरखैं सब वाल ॥११॥

श्री नाभापद

जागे रघुनाथ जानकी आलस भारी ॥
सर्मित ह्वै सुरत राग अरुन लोचन अति जम्हात-
ग्रीवा भुज उभै मेलि प्रीतम पिय प्यारी ॥
लटपटि शिर पाग लाल कुमकुम विन्दु मध्य भाल-
वर्षा रितु दिन कर मानो अर्भक उन्हारी ॥
जालरंध्र निरखत मुख कुंवरी नक वेसरसो-
अटकी लट श्री कर प्रिय आपने सँवारी ॥
सुन्दर सुहागनि जश पूरिरह्यो विश्वमध्य-
स्ववश किये रामचन्द्र नहिं त्रिभुवन अस नारी ॥
गौर श्याम मनोभिराम वारि फेरि कोटि काम-
जीवन फल देखि-देखि नाभौ बलिहारी ॥१२॥

आज सखी दम्पति राजत भोर।
दशरथ सुत अरु जनक नन्दनी विश्वविलोचन चोर ॥
अलसानी दीन्हे गलबहिंया अति सनेह दोउ ओर।
मायल करत करत हिय घायल चपल चखन की कोर ॥

नयन कटाक्ष हास मृदु उज्वल बाँकी भौंह मरोर ।
रामप्रसाद प्रिया प्रीतम दोउ विलसत नवलकिशोर ॥१३॥

भोरभये नव रंग महल में राजत जनक लड़ैती लाल ॥
श्याम गौर अंशन भुज दीन्हे कछु आलस युत नयन विशाल ॥
प्रेम मगन दोउ उरझि रहे हैं कनक लता जनु डार तमाल ॥
अग्र सहचरी तन मन वारत उझकि झरोखै झाकति बाल ।१४।

मंगल-मंगल करि श्रृंगार सुतन मंगल मई ।
मंगल थार सजाई द्रव्य मंगल मई ॥
मंगल यूथ बनाइ सखिन मंगल मई ।
मंगल कर लिये सौज चली मंगल मई ॥
पहुँची हेम निवास जहां मंगल मई ।
मंगल सखि लिये वाद्य बजावति रस मई ॥
गावन लागि बहु नारि राग मंगल मई ।
आलस युत सिय प्यार जगे मंगल मई ॥
सखि सब झाझरि माह विलोकति सुख मई ।
देखत युग विपरीत रहस मंगल मई ॥
विन दुकूल झलकात गात मंगल मई ।
लखिसखि सबसुख सिन्धु मगन मंगलमई ॥
निज-निज वसन सुधार दिव्य मंगल मई ।
बैठि दिये गलबाँह रूप मंगल मई ॥

पुनि परदा दै खोलि झाँकी मंगल मई ।
सखि सब रूप निहारि वारि तन मन दई ॥
पुनि बैठारे दोउ चौकि रतनन मई ।
मंगल द्रव्य दिखाइ प्यारी प्रीतम नई ॥
पुनि दोउ के शृँगार करी मंगल मई ।
मंगल भोग लगाई शेष सखियन दई ॥
आरति करि पट वारि मंगल मई ।
अंगन छवि अवलोकि सखी बलि-बलि गई ॥
मंगलमय यह ध्यान अग्र जो गावई ।
पिय प्यारी रस टहल महल सुख पावई ॥१५॥

उठे दोउ अलसाने परभात ॥
दशरथ सुत श्रीजनकनन्दनी सौधे भीने गात ॥
विमलादिक सखि चँवर डुरावति हरषि निरषि मृदुगात ॥
अग्र अली को श्रीरज दीजै सकल भुवन के तात ॥१६॥

आरति हरन आरती राम की ।
सुरतरु सुधा धेनु चिन्ता मणि वरषा पूरण काम की ॥
दीपावलि प्रतिबिम्ब अंग में शोभा सब सुख धाम की ॥
अग्र अली वरनै युग चन्द पर जानकि जीवन नाम की ॥१७॥

चले दोउ रंग महल ते लाल ।
प्यारी अंश पिया भुज दीन्हे डग मग पग धर धरनि निहाल ॥
स्नेह मगनरस सिन्धु शुभगतम अंगन छविझलकत सुखजाल ।

छत्र चँवर व्यजनादिक चहुदिशि राजत राज तनय प्रिय बाल ॥
विरदावलि वर वन्दि वाल सब गावत अग्र विरद प्रिय पाल ॥१८॥

राग देवगन्धार

जोति आइ कामकेलि रामरंग राती ।
जागी निशि चारियाम बार-बार जम्हाती ॥
पल दे पग धरति धरनि अधर सुधा माती ।
मन्डल भुज जोरि मोरि अँग अँग अँगुड़ाती ॥
टुटे उर हार चिकुर कंचुकि उलटाती ।
अधरनि छत कल कपोल बनी पीक पाँती ॥
नख सिख हरसात गात बानी तुतराती ।
सीता छवि निरखि-निरखि अग्र अली जुड़ाती ॥१६॥

राग ललित

रजनी जागे भामिनी आवत संग मधुप उचरत जय गान ।
डग मगात पग परत धरनी, पर राम अधर रस किनो पान ॥
आलस भरे एँड़ात जानकी मुदित मगन राखो पिय मान ।
अंग-अंग औधाहि देत सुख सर्वस अर्पि लियो रति दान ॥
सुबस किये सुन्दरवर रघुपति त्रिभुवन युवती नहिन समान ।
सहचरि सबै विलोकि विवश भई अग्रअली वलि बारति प्रान ।२०।

प्रात समय दोउ विहरत वाग ॥
नृपनन्दन नृपनन्दिनि दोऊ अलसाने सुखपाग ।

उरझनि हार वसन की विखरनि—लटपट अलियन लाग ॥
मीन मृगन गज हंश विलोकत भ्रमर कंज अनुराग ।
कोकिल करि चकोर सोर कर मोर अग्र पिय जाग ॥२१॥

वाग में विहरत राजकुंवर फुल वंगले छये नये वे ॥
जुही निवारी औ गुलक्यारी बेला फूलि रहे ।
खस खस की लागी टटिया सीतल भये गरमि गये वे ॥
सिय सुकुमारी पिय फुलवारी लता बितान नये वे ।
हौद हजारन प्यार भरे कल जल विच कमल छये वे ॥
सिया रसिकअलि अतर गुलावन सरस सुगन्ध मये वे ।
रुचि सो सींचति हैं सखियाँ मन भावत भये भये वे ॥२२॥

बशो यह सिय रघुवर को ध्यान ।

श्यामल गौर किशोर वयस दोउ जे जानहु के जान ॥
लट लटकत लहरत श्रुति कुन्डल गहनन की झमकान ।
आपस में हँसि-२ के हेरत खात खवात पान ॥
जहँ वसन्त नित मह-मह महकत लहरत लता बितान ।
विहरत तहँ दोउ सुमन बाग में अलि कोकिल कर गान ॥
यह रहस्य सुख रस को कैसे जानि सकत अज्ञान ।
देवहुकी जहँ मति पहुँचत नहि थकि गये वेद पुरान ॥२३॥

देखो झूलत राघो डोल।
जनकसुता लीन्हे संग शोभित गौर श्याम तन लोल ॥
हीरा पन्ना लाल पिरोजा रतन खचित वेमोल।
क्रीडत राम जानकी दोऊ बाजै दुंदुभि ढोल ॥
हँसत परसपर प्रीतम प्यारी आनन्द बढ्यो सचोल।
अग्र अलि सुनि-सुनि सुख पावति बोलहि मीठे बोल॥२४॥

जै रहै अवधेश ललन मिथिलेश लली की जै रहै ॥
पिय साँवरे सोहैं घटा सिय दामिनि सी छा रहै।
बातैं मधुर रस रहसि के आनन्द जल बर्षा रहै ॥
अति रंग भरे झूलै दोऊ दोउ ओर सखिय झुलवहीं।
झोका सरस झुकि झूमि झुमि भूषण झमा झम बजि रहै॥
चहुँ ओर से नागरि खड़ी बाजे सुमधुर बजावहीं।
कोउ तान लेति तरंग सो चातक मयूरिसि होइ रहै ॥
तिरछी नजर हंसि हेरि हेरि फुलगेंद की चोटैं चलैं।
श्री प्रेम अलि यह चाहती नित नैन में छाये रहैं ॥२५॥
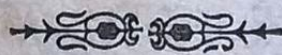
दन्तधावन

राम सिया पग धोवति अलियाँ। निजकर कमल सनेह सुरलियाँ॥
मनुरवि किरण सुवर्ण सुपात्रनि कुडमल कर पंकज मनुकलियां॥

विकसि मलति धोवति हिय लावति चूमति शीश नैन परसतियाँ॥
मृग मद मलय कपूर सुकेशर सुरभित जल झारी करधरिया॥
अरुण पीत पुनि अरुणनील दल२विधुकिरणकमल छबिछलिया॥
गोद राखि सौन्दर्य चरणदोउ चिन्हविलोकति निज सुखथलियां२६

दतुवन करत दोउ मिलि जोरी।
दशरथ सुत श्री जनक किशोरी॥

मृग मद मलय कपूर सुवासित युगल दातुवन सखि दइ कोरी।
इक प्यारी इक प्रीतम के कर मज्जन लगे दन्त सुख सोरी।
हँसि-हँसि मज्जन करत परस्पर बातैं करत मधुर मुसुकोरी।
दन्तावलि झलकत दोउन के छिटकि रही कर चन्द करोरी।
दोउ के दन्त धोवावत हँसि२अग्र अली सन्मुख रस बोरी।२७।

दतुवन करत सिया रघुराई।

सुन्दर सुखद रसीली दतुवन रदन धरत छबि छाई॥
जीभी कर जल परसत दोऊ मुख प्रछाल अंगुछाई।
अग्रअली उरझी चितवनि में मन्द मन्द मुसुकाई॥२८॥

सुगन्धा छन्द

मंगल आरति करि सखि राम रिझाइ कै।
भूषण कछुक उतारहिं प्रभु मन पाइ कै॥
कोइ सखि पट पहिरावहिं दूसर छोरि कै।
अष्ट कमल दल मणि चौकी दुइ जोरि धै॥

द्वौ चौकी वसु वसु सखी टहल चतुरि बड़ी।
अष्ट कोण दल दल पर आयसु लखी खड़ी॥
बागीशा, माधवी, प्रियाहरि, मनजीवा।
नित्या, विद्या, सविद्या, कूटरूपा—सीवा॥
आठौ मुख्य ढिगन द्वौ खड़ी सोरह सखी।
अवरनि ते लै देहिं आठ कहँ मन लखी॥
सिय चौकी पर मुख्य आठ सोरह सखी।
जस रघुवर सेवा महँ तस सिय के लखी॥
विमला, उतकर्षणी, क्रिया, योगा, प्रवी।
इशाना, ज्ञाना सत्या, सेवा कवी॥
आठ आठ जे मुख्य करहिं मन की लखी।
समय समय सब लिहे अपर कोटिन सखी॥
परम मुख्य सखि पाँच सुशीला, लक्षमना।
हेमा, अतिशीला, सुचारुशीला मना॥
पाँचहुँ की आज्ञा सुसर्व सेवा सुची।
अर्घ देति सखि अग्र राम सिय की रुची॥२६॥

रंग भरि जोड़ी सदा चिर जीवो।
सदा बिहार करो रंग मन्दिर रंग किशोर किशोरी॥
सदा सुहागल के अनुरागिनि रंगे रहो बड़ भाग बढोरी।
प्रिय के प्राण बसो सिय सुन्दरि सियमन स्याम बसोरी॥

पिय की चाहसु चात्रिक लौ रहो सिय की मया स्वाति बर्षोरी ।
सिय मुख चन्द सुधा रस द्रवो नित्त पिय के नैन चकोरी ॥
हमरे नैन प्राण की सर्वस अधिक २ सुख रस सरसोरी ।
कृपा निवाश उपास महल की टहल लगी सो लगोरी ॥३०॥

कवित्त—

श्री प्रसाद प्यारी ओर प्यारे ओर चारुशीला-
अंगन सुगन्धमय उवटनो लगावती ।
दोउन के खुले गात अंगन छवि झलमलात-
मानो शशि कोटि सुधा किरण को लजावती ॥
निरखि २ सुभग गात आनन्द उर में नमात-
कोटिन रति काम आली दोउन पै वारती ।
कोमल कर में सुधार उबटनो लै बार बार-
दोउन सखि हाथ अग्र देति रस भावती ॥३१॥

सिय प्यारे को लगावति उवटन ।

पद्म राम मणि की चौकी पर दुग्ध फेन सम बिछे बिछावन ॥
तापर स्यामा स्याम बिराजे कोटि मदन रति द्युतिन लजावन ॥
अति सुगन्धमय तैल नरायन तामें और मिलाय सुगन्धन ॥
शिरष कुसुम हूं ते अति कोमल अंग २ सुकुमार निरखि तन ॥
लै उबटन कर चहत लगावन करन कठोर समुझि हिय धरकन॥

अति भयभीत सहमि सखि लगवति-
लखि अद्भुत छवि बारति तन धन।
कोइ सखि प्रीतम अंग लगावति अग्र लगावति
प्यारिसुभगतन ॥३२॥

उवटन करत रँगीली अलियां ॥
युगल अली दोउ चरन लगावति चिन्ह बिलोकति छलियां ॥
युगल २ सखि दोउ भुज मीड़त उर पीठन युग अलियां ॥
अग्र अली दोउ रसिक परस्पर मुख मीजत छलि बलियां॥३३॥

उवटन करत सिया रघुराई ॥
सरस सुगन्धन बन्यो उवटनो लेकर उर सरसाई ॥
जोई २ अंग लगावत प्यारो सोइ प्यारी मन भाई ॥
अग्र अली के जीवन दोऊ निरखत दृग न अघाई ॥३४॥

कवित्त—

सिया असनान उवटनाते अज कीन्हीं केतिक उत्तम नारी ॥
तेई शील सुन्दर सौभागिनि बहुत गुनन के भारी-भारी ॥
जानकि अंग तीरथ में न्हाय बाम भई जग में उजियारी ॥
बनिता श्री रघुबीर बल्लभा अग्र स्वामिनी नहिं कोउ सारी॥३५

मज्जन करत लाल सिय प्यारी।
अष्ट कोन युग चौकी तापर दोउ दिशि कनक कि नारी ॥

बैठे पिय प्यारी तिन ऊपर अंगन द्युति अनुसारी।
चहुँदिशिते जल यन्त्र सखी लिये वरषि सुरभि सुठि बारी॥
उमगि २ जल धार लेत शिर हँसि मिलि करत खेलारी।
मलि-मलि अंग सखी अन्हवावति निरखत छबि बलिहारी॥
मज्जन करि सर पैठि कलोलत भूषन वसन बिसारी।
जल बिहार करि अग्र अली सब तट पट भूषन धारी॥३६॥

मज्जन करत रसिक मनहारी।

सुभग सरोवर तामें दोऊ करिणी संग करि रिब पिय प्यारी॥
सखिन सहित विहरत जलमाही बहुबिधि करत केलि रसकारी।
अंजलि भरि जल लेत परस्पर अखियन में मारत पिचकारी॥
बस्त्र झीन अंगन सब झलकत लखि २ दोऊ रसमतवारी।
करि मज्जन दोउ तट पर आये अग्रसमय समबसन सुधारी॥३७

यज्ञ

यज्ञ (सु) करत रसिक सिय प्यारो॥

सुरतरु तर मनिमय वेदी विच दाहिन सिय पिय बाम निहारो।
दाहिन इक अलिथार लिये कर पायस लै सिय पिय करधारो॥
द्वादश आहुति युगल मन्त्रसों जातवेद तिर्पित किय मारो।
हवन कुंड परिकरमा कीन्हें अग्र अलि के प्रान अधारो॥३८॥

दान

दिब्य मंडप महा यज्ञ किय साजयुत दानदिय-
श्रुति सखी रूपआई ॥
बिप्र तनया कही सीय रघुबर लही हरदि दधि-
अक्षतैं लै छिटाई ॥
धेनु भूषन बसन रत्न वासन अशन अन्न-
वाहन अमित दीनजाई ॥
पानिध्वै अंग शृँगार दूसर किये पूजि पिय प्यारी-
सब सखि सुहाई ॥३६॥

पति पूजन

प्यारी कटि सारी जरतारी सुधारी अली प्यारे कटि धोती-
सुपीली झलकारी है ॥
प्यारी वक्षोज पर कंचुकी सुधारी झीनी प्यारे-
उर कंचुक सुमोतिन की धारी है ॥
प्यारी गले चन्द्रहार प्यारे गले मुक्तमाल अंगद
पहुँची समुद्री नग जारी है ॥
चन्द्रिका शिपैंच पाग कानन में कर्नफूल कुन्डल-
अलि अग्र हाथ आपने सुधारी है ॥४०॥

सियजु पिय पूजन प्रीति पली ।
यज्ञ दान करि हर्ष हृदय भरि जन जिय रंग रली ॥
मंगलमय श्रृँगार किये अलि प्रीतम प्यारी भली ।
निज २ सौज सजी सखियन युत पास पियासु चली ॥
चन्दन अतर धूप दीपादिक फूलन माल झली ।
परिकरमा करि पिय बैठाये सिय सुख वेलि फली ॥
पुनि सखियन पुजे दोउ प्यारे गान विनोद छली ।
आरति करि सौन्दर्य विलोकत वलि सुखमा सुथली ॥४१॥

सास ससुर पूजन

राग-मंगल

अँग २ करि श्रृँगार सखिय सब साथ में ।
पूजन चलि सिय सासु प्रेम रस राग में ॥
पूजन के सब सौज साजि लिये थाल में ।
गावति नृत्यत चली सखिय उमगात में ॥
पहुँची सासु निबास अंग छबि को कहै ।
कोटिन रमा प्रकाश सिया द्युति अंग लहै ॥
देखि सासु अति प्रेम बातसल रस भरे ।
भरि अँकवार उठाय लेइ निज हिय धरे ॥
मस्तक की करिघ्रान बलैया लेइ के ।
इक टक मुख छबि निरखि अपनपौ भूलिकै ॥

सासु गोद ते उतरि सीय पूजन करी ।
षोडष भाँति बिधान प्रेमरस में भरी ॥
सासुन दई अशीश वधू अनु दिन बढ़ै ।
प्रीतमसँग अनुराग कबहु छिन नाघटै ॥
गंग जमुन-बहि रहै जगत या ना रहै ।
अचल रहै अहिबात सिया पिया साथ है ॥
पूजन करि सिय सासु आइ निज महल में ।
प्रीतम करि आलींग अग्र सिय साथ में ॥४२॥

मातु पितु दर्शन

रघुवर मातु महल को जात ॥
भरत लखन रिपुदवन साथ लिये और सखन के ब्रात ।
कन्ठ सुभग गजमुक्ता माला सिर पगिया छलकात ॥
नख शिख साज शृंगार मनोहर सखन संग बतरात ।
धनुष बान करमें सुठि सोहत अँग लखि मदन लजात ॥
मातु महल के पौरी पहुचे तुरंग उतरि चहु भ्रात ।
मातु समीप वैठि अनुजन युत करि प्रनाम नमि गात ॥
गोद बिठाइ लई कौशिल्या मुख चूमत हरषात ।
बालक वत करि-करि के चेष्टा मातु गोद हलरात ॥
जननी देखि-देखि सुख फूलैं आनन्द उर न अमात ।
बहुत भांति पकवान मिठाई निज कर कमल खिलात ॥

करि कलेउ अम्बा प्रनाम करि संग सखन सबभ्रात ।
अग्रस्वामि निज महल पधारे प्यारि लपटि भरि गात ॥४३॥

कलेऊ

करत कलेऊ मिलि दोउ प्यारे ।
जनक नन्दनी अवध दुलारे ॥
बरफी मोदक तपत जलेबी खाझा घेवर अति रूचीकारें ।
बीज पाक रसगुल्ला खुरमा मोहनभोग पूप रस दारे ॥
पूरी कचौरी मठरी पापरि गुझिया गोझा मिसरी डारे ।
और अनेक भांति के व्यंजन कनक कटोरन अग्र सुधारे ॥४४॥

नवल कलेवा कुंज में राजत पिय प्यारी ।
मनि चौकी बैठे दोउ घन दामिनि अनुहारी ॥
कोउ सखि कर कंजन लिये सरयू जल झारी ।
पान पात्र कोउ सखि लिये रहि बदन निहारी ॥
भरि भाजन पकवान के षट रस विधि चारी ।
ल्याई सखि सिय लाल को परुसति मनि थारी ॥
चहु दिशि अलि मण्डलि लसैं रस वचन प्रचारी ।
गावत सखि कोउ यन्त्र लै सुर मधुर उचारि ॥
लखि रूप अली अचवाइ के दइ वीरी सुधारी ।
रसिक अली आगेधरी चौपरि वर सारी ॥४५॥

वृहद श्रृंगार

सकल सुनारी प्यार परसभरि करत शृंगार सँवारि युगलवर।
लहंगा ललित कलित कटि धोती कुच कंचुक वागोवर नागर ॥
युगल कमल पदविमलं महावरि रचित सुघर लखिअरुण नैनकर।
पद पावन पद पान मनोहर पदज विभूषण पायल नूपुर ॥
गुल्फैं कमल जानु कटि किंकिनि क्षुद्र घंटिका माल करनिगर।
उदर रोम राजी त्रिवली वर नाभि सुभग सौंधी सींचत तर ॥
मलय कपूर सुकेशर लेपन प्रिया उरोज सुप्रीतम उर पर ।
पदिक हार माला मोतिन की चम्पकली दुलरी तिलरी हर ॥
मणि माला मुक्तावलि कण्ठी चौकी चौक सु राम सुभग धर ।
भुज प्रलम्ब अंगद युत भूषण चारि चारु चूरी मुदरी पर ॥
युगल वदन सुख सदन मनोहर चित्र कपोल चिबुक वेंदीथिर ।
दशनदमक दुति वीरी रोचिक बिम्ब बिलज्जित मृदु अरुणाधर॥
श्रवण तरोने फूल झूमका कनक लता मनु फूल फरी फर ।
लाल श्रवण कुंडल धरि सुघरनि शशि मंडल मनो कीन्ह मकरघर ॥
नाशा लटकन सहित नथुनियाँ दृग अंजन खंजन तिमि नाशर ।
भाल विशाल युगल श्रीशोभित अर्धचन्द्र उपमा जग की हर ॥
टीको वन्दी शीश फूल मणि क्रीट चन्द्रिका जटि मुक्ता लर ।
अलक झुकाई इन्दुसदन जनु सुधा लोभ नागिनि न सकीटर ॥
मुक्तन मांग भरी गुहि वेनी कछु उपमा आई मेरे उर ।

शीश सुहाग पांति मनु उघरी परी सुपाठि गुमान गहर टर ॥
दोउ कर सुमन छरी उपरना सारी सरस फैल फवि सुन्दर ।
कृपा निवास श्रीजानकि वल्लभ दुलरावति सहचरि रंगमंदिर।।४६
अली शृँगार भवन मधि राजत ।
ललित विभूषण अरस परस दोउ अँग २ प्रति साजत ॥
बैठे चारु रतन चौकी पर सुखमाशील अपार ।
जनकलली रघुलाल सलोने रूप अमित रतिमार ॥
नवल २ सखि करकंजन लिये दिब्य विभूषण ठाढ़ी ।
कोउ दर्पण कोउ अंग राग लिये प्रीति अलौकिक बाढ़ी ॥
सजि शृँगार दिब्य सिंहासन बैठे छवि रस रासी ।
चर्वण पान दशन की चमकनि मृदुल बचन रस भाषी ॥
छकी सखी पिय प्यारि रूप रस गावति कोकिल वानी ।
भोजन मधुर कराई सखि अचवाइ दिब्य सरि पानी ॥
रसिक अली आरति सजि ल्याई चौक साथिया पूरी ।
मंगल कुम्भ रुचिर दीपावलि सौज सकल रचि रूरी ॥४७

शृंगार आरती

सखि आरति करैं रस प्रेम भरी सिय रघुवर को शृँगार करी।
मनिमय थार सखिन कर राजत बाती रवि शशि दुति निदरी॥
बाजहि ढोल निशान दुन्दभी शंख झांझ करताल घरीं ।
नाचहि गान करहिं सखि थेइथेइ सुमन माल मणि होत झरी ।
रामचरन सियराम रूप लखि सखि आनन्द रस सिन्धु परी॥४८

राग सारंग—

सभा भवन सुख समय तयारी अवध ललन ललना सियप्यारी।
लाल पिया सुख पाल पालकिन चारुशिलादिक सहचरि सारी।।
अपर सखीरथ यान बिमानन चली संग सब राज कुमारी।
दोउ समाज प्रमदा सरि सुन्दरि शभा भवन रत्नाकर भारी।।
मिलि वगमेल चली संगम हित पिय प्यारी संग न्यारी न्यारी।
शुभग दिव्य सिंहासन सुन्दरि बैठारे सब सौज सँवारी ।।
चमर छत्र व्यजनादिक दुहु दिशि विविधयन्त्र तन्त्रादिक धारी
अष्ट खण्ड सुख शभा कचहरी बैठि तंह जो जँह अधिकारी।
आठ प्रथम सोरह पुनि वत्तिश पुनि चौशठि निमि बंश दुलारी
चारि खण्ड जे अपर कहे तह बैठि देश २ वर नारी ।।
सात दिप नौ खण्ड तिहु पुर सुर नर नाग नृपन की वारी।
देश २ की नकल गान करि लै लै युगल चन्द बलिहारी ।।
नाचन लगी झुन्ड झुन्डन मिलि हाव भाव करि बैठि जुहारी।
सजि आरती मणिन थार वहु मनहु मची यह दिव्य दिवारी
ज्ञाना अलि पुष्पाञ्जलि जय जय करहिं खडी बड़ी भाग हमारी।४६

सभा कुन्ज बिहार-राग ललित

मुकुट उद्योत होत,दिन दिशितैं,ब्रह्म काल नही पवत ब्रह्मबित।
आतुर अमर आगमनै धावत, रामचरन बन्दन निद्रागत ।।
उठि आवत जो जही तही ते भोर भये हेलें परसन को।

भ्रामक भोर भूली ऋषि सन्ध्या दिव वाशी आये दर्शन कौ ॥
निबसत निकर असुर सुर नर मुनि कीरघोष जय घोष अपार ।
अग्रदास बलि पाद पीठ पर बन्दी वेद करत कै बार ॥५०

चंचल नारि तुम्हारी कीरति दशौदिशा को धावत ।
सुर नर असुर लोक लोकन में रघुपति तुव यश गावत ॥
घर घर वार फिरति कुलटा ज्यों निकट नाहिं सुचि पावत ।
बिसद बिशाल जशहि बिस्तारत यह अचरज मोहि आवत॥
पतिब्रत प्रण छोड़े है यद्यपि सबहि याही सुहावत ।
सन्तन जीवन मूरि सदाही अग्र दास जिय भावत ॥ ५१

अकरन न्याय कियो यहि धाता ।
अति हि चातुर सृष्टि रचना को अग्र सोच समुझत अति घाता॥
फणिपति रघुपति को यश सुनि कै जोपै मूड़ डुलावत ।
फूट जाय ब्रह्माण्ड खण्डसब बहुरि करत दुख पावत ॥
याते उरग श्रवण बिन सिरजे जगत भंग डर आवे ।
बिशद श्रुति श्री अग्र स्वामी के कौन न ग्रीव डुलावै ॥५२

चौसर खेलत रसियालाल, प्यारी संग सुख आल ।
सारी फल जरिदार मखमली स्याम पीत सित लाल ॥
पासा हीरा के अति सुन्दर युग दल सखि कर चाल ।
श्री प्रसाद प्यारी दिशि चातुरि चारुशिला उत काल ॥
दम्पति टोल हनें गनि गोटी कौतुक कर सियलाल ।
चतुराई चित चोरत खेलत दोऊ नैन विशाल ॥

प्यारी हँसि प्रीतम को हेरत कर से न पाशा चाल।
देखि लाल ठगवग से रहि गये कुच बिच इन्द्र सुजाल॥
भूलि गये चतुराई आपनि जीत लई सिय बाल।
हारि लाल सिय अधर चूमि लई अग्र धूर्त बड़े लाल॥५३

गुरजन स्वागत

कीर निशा की कहत केलि।
गुरु जन सुनत सकुच सीता के भूषण चापि चूनि दइ मेलि॥
डारयो ब्याज बीज कह्यो भुंजो तो वदिहौं जान्यो जो स्वाद।
सुक सम्भ्रम में परयो विभाषनि भूलि गयो पूर्व अनुवाद॥
नागरि नारि उक्ति यह उपजी वैदेही बर राज कुमारि।
अग्र अली कह अचरज नाही सखीरीझि रहि वदन निहारि॥५४

राज कुँवरि पूजति मंजारी।
कहा न कीजै अपने कारन गूढ़ भाव इक बात विचारी॥
निशा घटत सुख हानि होत है बाल बैर कीनो तमचारी।
याही दोष विलारी पाली पय प्यावत राघो की प्यारी॥
जो चुप किये रहैं वह कुक्कुट तौ कतभोर होय कहिहारी।
निद्रा भंग समर रस सर्मित अग्रति दुखित श्रीजनक दुलारी॥५५

राग-कन्हरो

नर बर राम तिया बर सीता।
या जोरी को उपमा नाही धाता निरखि रह्यो भय भीता॥

सोच सन्देह करत चतुरानन दूजे काहू सृष्टि चलाई।
उभय लोक पर्यन्त फिरयो पै यह मूरति गति कहूँ नपाई ॥
वेद विचार कियो जब ब्रह्मा नेति-नेति इनही को गावत।
रामजी इष्ट जगतपति नियँता सोइ अग्रदास जियभावत ॥५६॥

राम से राम सीता सी सीता।

शिव बिरंचि शारदा शेष शुक पटतर खोजि कलप बहु बीता ॥
सुन्दर शील सुहाग अमित गुन अखिल लोक नरनारी जीता।
अग्र स्वामि स्वामिनी उजागर नेति २ श्रुति गावत गीता ॥५७

जगत जपत रघुनाथ नाम सब राम जपत सीता को सुमिरन।
रामचन्द्र को ध्यान धरत मुनि बसत जानकी रामचन्द्र मन ॥
शिव बिरंचि के धनुषधरन धन रघुवर के मैथिली महा धन।
परम हंस कुल राम भजन भर अग्र स्वामि इक पत्नी को पन ॥५८

युवती गुण जानकी पतिब्रत भाग सुहाग सुभगता सागर।
सत्य सौच जित क्रोध दयायुत कीरति बिशदलाज मृदु आगर ॥
एक नारि ब्रत न्याय अमितगुन रिझय राम नयना वर नागर।
त्रिया तिलक निर्दूषण भूषण अग्र स्वामिनी जगत उजागर ॥५६

राग—कान्हर

साचो सुहाग जानकी तेरो रघुवर भल वश कीन्होरी।
परसत पानि और नहि परस्यो इक ललना ब्रत लीन्होरी ॥
तोसो नारि नहीं त्रिभुवन में पिया प्रेम रस भीनोरी।
अग्रस्वामि मन वच क्रम तोको रीझि अलिंगन दीन्होरी ॥६०

राग–बिलाबल

इक नारी ब्रत न्याय धरचो ।
अखिल भुवन अच्युत नहि हरिको निर्णय यह रघुनाथ करचो ॥
बनिता रतन शिरोमणि सीता शील सुजश सबही प्रचुरचो ।
ता तन मगन भये तनमयता पैठि राम नाहि न निकरचो ॥
कहा भये जो कोटिन पतनी सुखस्वारथ एको न सरचो ।
रूप उदारविनय लावणि गुण अग्र स्वामि मनोरथौ भरचो॥६१

मेरी स्वामिनि सुहाग अद्वितीय पटरानी ।
रघुपति को अवर नारि सपने न सुहानी ॥
लावनि गुन रूप शील सबहिं लीक तानी ।
अग्रस्वामि सियाराम विदित जग कहानी ॥६२

रूप रासि सीता दुलहिन को देखन आई गुरुजन नारि ।
उठत नहीं अति काल है गयो पढ़ि मोहिनीमूढ़ मनो डारि ॥
रामचन्द्र मिलिवे कंह आतुर बासु कि शेष कठिन भयो भारि ।
अनंग पीन अकुलाइ दण्डकर त्रासत तुरगनि बुद्धि विचारि ॥
रवि पूर्वज हमरो मंगल रथ प्रेरन को सुधि बुद्धि जु विसारि ।
ये अशु दर्शन उनके नाते वेगि चलो कुल जानि दुखारि ॥
सहि नहि सकत वियोग पलक को असता चलतन रहै निहारि ।
मदन तरंगन मगन अग्र प्रभु पाई जीवन जनक दुलारि ॥६३
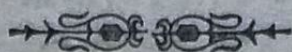
सखियों का गान--

राग—ललित

वदनार बिन्द पर वलि २ कियो प्यारी ॥
कुन्द इन्दु विद्रुम जु बिम्बमिलि मीन मृगलीन खंजन छबिहारी।
नासिका कीर तिल पुहुप दाडिम दसन हँसन-
विगसन कमल कहा करै सारी ॥
भाल दीपत मुकुट भौंह राजी भँवर,
भृकुटि सर चाप मनमथ सत हारी ॥
चिबुक त्रिभुवन चारु सुभग सुकपोल तर,
आनन्द कन्द विधिना सँवारी ।
राम सुखदैन मधुवैन स्वामिनि अग्र,
जानकी नारि वर नृप दुलारी ॥६४
राम रमणि गज गवनि अवनि जा चम्पक वरनि मीन मृगनैनी ।
वदन इन्दु अरबिन्द कुन्द दुति अधर विम्ब विद्रुम पिकवैनी ॥
सीता के शौन्दर्य शील वृत्त उपमा सकल सकुच भई गौनी ।
वनितावर त्रैलोक्य उजागर अग्र स्वामि उर आनन्द देनी॥६५

राग—सारंग

सबकी शोभा सिमिट लई ।
वैदेही को बदन विलोकत अन्तर भूत भई ।
गजगति हंस जंघ कदली कटि केहरि दसन अनार ।

कुच नारंगि कान्तिकल धौतहि मुख विधु अम्बुज चारु ॥
ग्रीवा कम्बु कपोत अधर विद्रुम दुति नासा कीर ।
नैन मीन नागिनि वेनी अहि कोकिल गिरा गम्भीर ॥
श्रीहत भये सकुच सव जित तित तप ब्रत जाय लियो ।
कोउ वन कोउ आकाश अग्नि जल कोउ पाताल गयो ॥
वलि अरु वरुण वह्नि वासव मिलि बदत भये यह बात ।
सीता शरण गहो सब तजि कै अग्रदास बलि जात ॥६६

मेरी स्वामिनि को अविचल सुहाग ॥
जाको परसि अवर नहिं परसी रघुपति दिन२ बढ्यो अनुराग।
सीतासी सिरजी न सुपत्नी केलि अकंटक लग्यो न दाग ॥
अग्रस्वामि स्वामिनी अहर निसि सुख विलसत दोउ भूरिभाग।६७

सर्वोपरि मम स्वामिनी, राघो की प्यारी ॥
जाको परसि अवर नहिं परसी व्रत लीन्हो इक नारी ॥
स्ववश किये दशरथ नृपनन्दन नाहिन कोऊ सारी ।
वैदेही के कमल बदन पर अग्र अली वलिहारी ॥६८

जनक कुवरि रघुनन्द मनावत
प्राण प्रिया जनि खेद मनावहु सखा शीघ्र लै आवत ॥
उनके भाव सदा तव पद में कृपादृष्टि चित लावत ।
मृगनैनी मोहि हरि करि कौतुक तोविन कछु नहि भातव ॥
सत्य सराहि सदा सिय के वश राज तनय वतरावत ।
यह रहस्य दृगकोर कृपा सिय अग्र सखी मन लावत ॥६९

आखेट लीला-

राग—खेटक

देखु सखी मृगया खेलन को राम लला चले जात ।
भरत लखन रिपुसूदन संग में सखन सोह बहु बात ।।
चतुरंगिनि सेना संग लीन्हे दुदुंभि ध्वनि घहरात ।।
नखशिख सुन्दर गात मनोहर लखि द्युति काम लजात ।
धनुष बान कर में सुठि सुन्दर कटिभाथा चमकात ।।
चपल तुरंग नचावत हँसि २ शोभा वरणि न जात ।
अग्र नयन सर नारिन वेधत लिये जात मन सात ।।७०

रघुवर लागत है मोहि प्यारो ।
अवधपुरी सरयू तट बिहरै दशरथ प्रान पियारो ।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुन्डल पीताम्बर पट वारो ।।
नयन विशाल माल मोतिन की सखि तुम नेक निहारो ।
अँग २ रूप अनूप बनो है चित्त से टरत न टारो ।।
माधुरि मूरति निरखो सजनी कोटि भानु उजियारो ।
जानकि नायक सब सुखदायक गुण गण रूप अपारो ।।
अग्र अली प्रभु की छबि निरखी जीवन प्राण हमारो ।७१

श्री राघो जिकि आज सजी असवारी ।
दशरथ राज कुमार लाडिले शोभा न्यारी न्यारी ।।
सजे तुरंग रंग राजन के भीर गजेन्द्रन भारी ।

जगमग झूल जरी की सोहैं रतन जड़ाव अँबारी ॥
धूम गरज सो भरत जी आये श्री रघुनाथ निहारी।
होत कुलाहल लखन लाल के रिपु सूदन छबि न्यारी ॥
हरषे देव सुमन बहु बरषे जय २ कार उचारी।
ब्रह्मादिक दर्शन को आये मोहत बदन निहारी ॥
रबि शशि कोटि बदन की शोभा चन्द्र कला उजियारी।
अग्र अली प्रभु की छबि निरखे चरण कमल बलिहारी।७२

अब देखो राम जी ध्वजा फहरानी ॥

झलकत ढाल फरकते नेजा गरद उड़ी असमानी।
लक्ष्मण वीर बालि सुत अंगद हनूमान अगवानी ॥
कहत मन्दोदरि सुनु पिय रावण त्रिभुवनपति सैठानी।
जा सागर को गर्भ करत है तापर शिला तराई ॥
तिरिया जाति बुद्धि की ओछी उनकी करत बड़ाई।
भुव मण्डल से पकरि मगैहौं ओ तपसी दोउ भाई ॥
हनूमान से पायक उनके लक्ष्मण से बलि भाई।
जरत अग्नि में कूदि परत हैं कोटि गने नहिं खाई ॥
मेघनाद से पुत्र हमारे कुम्भकरण बलि भाई।
एक बार सन्मुख होइ लरिहैं युग २ होत बड़ाई ॥
कहति मन्दोदरि सुनु पिय रावण तोहि मम एक न भाई।
राति को सपनो ऐसो भयो है सोने की लंक लुटाई ॥
बन्दर एक लंक बिच आयो घर २ धूम मचाई।

बाग उखारि समुद्र में डारे लंका आगि लगाई ॥
गरवी रावण गरव न कीजै गर्वहिं लंक लुटाई ।
जाय मिलो रघुनाथ कुँवर से लंक अचल हो जाई ॥
इक लख पुत्र सवा लख नाती मौत आपनी ठानी ।
अग्र स्वामि गढ़ लंका घेरे अजहु न चेत्यो मानी ॥७३

जब कर राघो जी बान धरैंगे ।

संग रघुनाथ भीर बनचर के कपिदल कोपि चढ़ैंगे ॥
स्याम घटा घन झुकि अँधियारी सूरज गगन छिपैंगे ।
पचरंग बाण राम लक्ष्मण के सागर तीर रुपैंगे ॥
जा सागर को गर्भ करत है तापर सेतु बधैंगे ।
जामवन्त हनुमान नील नल महाधुनि गर्ज करैंगे ॥
रात भयानक सपना देखी लंका कोट लुटैंगे ।
नाम विभीषण बन्धु तुम्हारे रघुपति जाय मिलैंगे ॥
मेघनाद से पुत्र तुम्हारे वे नहिं धीर धरैंगे ।
कुम्भकरण बल बन्धु तुम्हारे रण में जूझ मरैंगे ॥
महिरावण से योद्धा मरिहैं लंका नाश करैंगे ।
सहस योगिनी मंगल गावैं खप्पर बारि भरैंगे ॥
दश शिर और बीस भुज तुम्हरे एकहि बाण हरैंगे ।
जो नारद मुनि मुखते भाषी भारत राम करैंगे ॥
कहत मन्दोदरि सुनु पिय रावण रघुवर नाहिं फिरैंगे ।
अग्रस्वामि कोलै मिलौ जानकि किहु विधि विघ्न टरैंगे॥७४

हे यान चढे रघुनन्दन आय हनुमत चंवर ढुरायोरी ।
जामवन्त सुग्रीव बिभीषण अरु अंगद मन भायोरी ॥
करत पुनीत देव सब हरषे दण्डक वन आयोरी ।
देखि सिया दण्डक वन शोभा ऋषि विचरैं भय त्यागोरी ।
चरित पुनीत किये रघुनन्दन अवध निकट हरि आयोरी ।
उतरे पुष्प निकट सरयू के रघुपति आज्ञा पायोरी ॥
चलत तृसित अति गये सकुच मानो मरुत जलद जल लायोरी ।
ब्याकुल अंध अवध जेहि कारण उदित अरुण होइ आयोरी ॥
होत अवध आनन्द बधाई सखियन मंगल गायोरी ।
सुख अवलोकि कोक जिहि लाजै रघुपति पुरी सुहायोरी ॥
चर अरु अचर हर्षयुत जँहँ तँहँ रघुपति कीरति गायोरी ।
द्विजन सहित आये नृप द्वारे अग्रदास गुण गायोरी ॥७५
सीताराम अवधपुर बासी नित दरशन उठि पावै जी ।
रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहग शोभा वरणि न जावैजी ॥
संग सखा सरयू तट बिहरैं राम लखन दोउ भाई जी ।
सुन्दर बदन कमल दल लोचन उर बनमाल सुहाई जी ॥
अवधपुरी नर नारी निहारे निरखि परम सुख पाई जी ।
मातु कौशिला करत आरती अग्रदास बलिजाई जी ॥७६
(आवत) रघुनाथ अनुज संग लीन्हैं, खेल किये चौगाने ।
अश्व सुगज रथपागैं, बने बिचित्रैं बागे —
अरुण पीत सित चँवर छत्र वर वानै ॥खेल०॥

राजकुमारी अति सुकुमारी झरोखन झाकति बिबिध—
मनोरथ ठानति, करत नयन मधु पाने ॥ खेल० ॥
कोउ वारत तन, कोउ वारत मन, कोउ वारत धन—
निरखि नयन छबि, पुष्पाञ्जलि वरषानै ॥ खेल० ॥
मंगल भाजन लै नीराजन, सब सुखसाजन प्राण—
मिले जनु, जननि निरखि मन मानै ॥ खेल० ॥
कियो प्रवेश सदन सीता के कलप वेलि तरु रंगमीता के,
अनंग केलि रस रहस अग्र गुण गानैं॥खेल०॥७७॥

रघुनन्दन प्रभु आवै ।

उपवन बाग शिकार खेलि के चढ़े तुरंग नचावै ॥
क्रीट मुकुट मकरा कृत कुण्डल उर मणिमाल सुहावै ।
कटि पर लट पट पीत बिराजै कर गहि बाजि उड़ावै ॥
चतुरंगी सेना संग सोहति पचरंगधुज फहरावै ।
बजत निशान भेरि शहनाई गदग गगन मँह छावै ॥
बन्दी जन गन्धर्व गुण गावत भावत प्रभु हिं रिझावै ।
सुर नर मुनि ब्रह्मादि देवता इन्द्र पुहुप झरि लावै ॥
अवधपुरी कि वधूटि अटा चढ़ि निरखि परम सुख पावै ।
मातु कौशल्या करत आरती अग्र अली बलि जावै ॥७८
करि सिकार आये रघुनन्दन संग सखन सब भ्रात ॥
पितु समीप में जाय जुहारे सुत लखि अति हुलसात ।
निज कर कमल उठाय गोद धरि चूमत लखि भय गात ॥

अति दुलार से पूछत पुनि २ खेटक के कुशलात।
कहि सुनाय खेटक की बातै सुनि २ पितु पुलकात॥
पितु प्रणाम करि निज बैठक में आय गये रसरात।
रतन जड़े चौकी पर बैठे बैठक में सब साथ॥
श्रम सींकर मुख पर राजत जनु कमल कोष हिम पाँत।
चहुंदिशि सखासौज सब लीन्हें सब सुन्दर सुठि गात॥
कोउ मुख ऊपर मधुर पवन करि निरखि २ वलि जात।
बहु मेवा पकवान मिठाई सुरभी जल शितलाल॥
भरि २ थालन में सजि २ के अम्ब भेजि बहुभाँति।
भ्रात सखन युत पावन लागे हँसि २ बहु बतरात॥
एक २ सखन से बूझत प्यारे घर २ के सब वात।
करि भोजन अचवन को करि कै पानखात मुसुकात॥
गानवाद्य होवन लागी पुनि आनन्द कहि नहिं जात।
पुनि प्यारी सुमरन हो आई मिलन हिये उमड़ात॥
गान वाद्य को करि समाप्त पिय शीघ्र चले अकुलात।
अग्र स्वामिनी से मिल के हिय अति कीन्हीं शितलात॥७६

प्रीतम मग जोहति सिय प्यारी।
कनक महल के खिरकी पर है सखियन युत निरखति सुकुमारी॥
रहि न जात प्रीतम विनु देखे गुणन सुमिरि पिय विरह निवारी।
छिन२ विरह लहर जारत तन बिकल प्राण जनु मीन बिचारी॥
कहत सखी पिय आवत हैं यह आतुर है तिहि ओर निहारी।

तेहिछिन प्रीतम आय अग्रअलि भरि अँकवार मिली सियप्यारी८०

राग टोड़ी—देखुरी नीके रघुनन्दन ॥

सीता कहति सखी अपनी सो रसिक राय शिरमौर स्यामतन॥
दृष्टि चलत नहि इत उत सजनी रूप रासि सो मोमन फन्दन।
अग्रस्वामि सौ मोह बढ्यो अति ज्योंचकोर चन्दहि अभिनन्दन८१

राजभोग–छबीले दोऊ आवत भोजन शाल।

झूमत झुकत चलत मतवारे रसिक रँगीले लाल॥
करत कटाक्ष परस्पर लपटत दीन्हें गरभुज माल।
हँसत हँसावत रस उपजावत संग सहचरी जाल॥
प्राण प्रिया कछु कहत नवेली हरषित होत निहाल।
अग्र अली बैठे दोउ प्यारे निरखत भोग विशाल॥८२॥

श्री नाभा दोहा-चरण पादुका सुमन युत चढ़ि दीन्हें गलवाँह।
पंगत शाल अनूप जहां चले जानकी नाह॥
चन्दन सिंहासन सुभग मणिमय जरित जराय।
सिय सियवर आसीन तेहि दीन्ही सखिन रजाय॥
निज २ पीढ़िन सहचरी भई सकल आसीन।
सो अबसर लखि ऋषि वधुन आनि थार धरि दीन॥
कंचन थार अनूप अति ओदन मध्य सुबास।
व्यंजन चारि प्रकार के परुसे सहित हुलास॥८३।

जेंवत कुंवर रसिक रघुनन्दन रस आगरि सिय प्यारी।
छप्पन चार छऊ रस उपरस भोग सौंज सुखकारी॥

चिन्तामणि चौकिन पर कोमल दुग्ध फेन सम सारी।
तिन ऊपर रुचि जानि जुगल की रचना न्यारी न्यारी॥
फल रसमय अंकुर कन्दावलि मेवा मधुर सुधारी।
चटनी निकर अचार मुरब्बा अमित भाँति तरकारी॥
परसति परम किशोर नागरी जानि युगल रिझवारी।
सुरभिवन्त शीतल सरयू जल यन्त्रित मंगल झारी॥
रस मीनी बतियन बिरमावति प्यावति निजकर बारी।
अंचल विजन कमल कर सारति अति मृदु मंजु बयारी॥
दम्पति एक थार निज मंदिर जेवत मोद कन्द मृदुभारी।
अग्रअली के जीवन दोऊ तृण तोरति बलिहारि॥८४॥
मिलि जेवत श्री रघुवीर वने सखि संग लिये मिथिलेश लली।
भुज अंश दिये बहियां जुलसै बिहसैं मृदु मंजु अनंग रली॥
करि कौर सिया मुखदेत पिया कहि स्वाद सराहत भाँतिभली।
रसके निधि दम्पति रंग भरे निरखैं चहुँ ओर किशोर अली॥
मणि मन्दिर में झलकै प्रतिविम्ब मनोज के मानो बिहार थली।
अवधपुर नित्य बिहार करैं लखि अग्रअली जुकि आश फली॥८५
दोउ जेवत हास बिनोद मगन रस रंग उमंग अँग २ परसै।
यरसि परसि पर स्वातिक मातिक ग्रास उठे मुखना परसै॥
स्वकर सुधारस कौर सिया को लाल जिमावत हित दरसै।
दृगकोर सिंहाय सुभाग भरे कर चूमि महा मन में हरषै॥
गीत वाद्य नव तान तरंगनि संग सुहागिनि सुख सरसै।

कृपा निबास प्रसाद मिलै मोहि जाको महामुनि मन तरसै।।८६
श्री नाभा दोहा-हँसि कह लाल सुनाइके अवला कंठ सकेत ।
भोजन को अतिसय सिलिल हास विलास सचेत ।।८७

भोजन करि बैठे पावत पान ।
गोरी नवल किशोरी सियजू प्रीतम श्याम सुजान ।।
कोउ अलि फूल माल पहिरावति अतर करावति घ्रान ।
बीड़ी बदन अधर छबि झलकत मन्द मन्द मुसुकान ।।
प्रीतम हँसि प्यारी तन हेरत अरुण नयन अलसान ।
प्यारी कर गहि उठे लाल तव रसिक अली सुखदान ।।८८

दिन का शयन-

रसिक दोउ शयन कुंज को जात ।।
भोज करि शुचि पान सुचर्वित मन्द मन्द मुसुकात ।
आस पास सब सहचरि राजै सुभग मनोहर गात ।।
पहुँचे शयन महल के भीतर शोभा बरणि न जात ।
अति सुगन्ध चहुँदिशि महँ महँकत भँवर झुन्ड मड़रात् ।।
बैठे पलका पर दोउ प्यारे करत व्यंग रस बात ।
कोइ सखि मधुरे वीण बजावत गान करत स्वरसात ।।
पुनि दोउ मिलि अलसान लगे सखि परदा करि चहुं कात ।
पौढ गये जब दोउ पलका पर अग्र चरण सुहरात ।।८९
शयन समय सुख आरति कीजै। लड़िलि लाल निरखि छबि लीजै।

युगल चरण मुख चन्द्र विलोकनि नैनन सो अमृत रस पीजै ॥
रामसिया सुख सेज पधारे महामोद आनन्द रस भीजै ॥
जैति प्रसाद निवास अलीछवि एक पलक न्यारो नहिं कीजै॥६०
देहरी धशत जब जेहरी देखि मन डगि गयो उठी उरलाई।
अति आदर सो भरि अँकवारी प्राणनाथ पलका पधराई ॥
आगत स्वागत बारि बारि तन वीरि सुहाथ बनाइ खवाई ।
बार बार आलिंगन चुम्बन मनहु रंक निधि पारस पाई ॥
बचनामृतसो सींचि विविध विधि जनक कुंवरि रघुराइ लड़ाई।
जालरंधह्यों निरखि अग्र अति कामकेलि सुख बरनि न जाई ॥६१

दिन का जागरण

भयो समय सुख शैन ते जागो नव सुकुमारो ।
मन मथनि सुखपुंज सुरति पथ सखि जन हित हिय हेत अपारो॥
मौज लिये अलियां चहुं ओरैं कुमुद विपिन मुखचन्द उघारो ।
शौन्दर्य सुखद मनोहर दोऊ अमिय दरश तन परसि उबारो ॥६२

जागिये सियाराम पियारे ।

सखि जल बसन असन सुपास लिये जो चाही सो मागिये ।
पवन करहि मधुरे स्वर गावहि पिय प्यारी रस पागिये ।
प्रेम सहित सखि अरज करति है पिय आलस को त्यागिये ।
अग्र रामचरण करुणा निधि निज २ कृत सखि लागिये ।६३

दिवस मसि सोइ उठे सिय प्यारे ।

उत्थापन के समय समुझि सखि चहुँ दिशिते जुरि सारे॥

मधुर स्वरन गावत सुरसावत मधुर मन्त्र करधारे ।
अलसाने उठि बैठि लटपटे अंशभुजा दोउ धारे ॥
अंग वसन सजि सेज तरे पग पावड़ि मखमल धारे ।
सुखमज्जति पटपोंछि श्रृंगारति अलक सुछवि घुंघबारे ॥
असन बसन भूषन मनिबारे आरति पलंग सुधारे ।
न्यौछावरि तृण तोरि आरती करत सुगान उचारे ॥
करि आरती प्रणाम अग्र दोउ दम्पति जैति उचारे ।
उतरि पलंगते बाहर बैठे दिब्य सिंहासन प्यारे ॥६४

दिवस उठि सेज रहे अलसाय ।
आरति करि पुनि उतरि पलंगते दिव्य सिंहासन आय ।
मनिझारी अचवाय सखी सब निज अंचल अँगुछाय ॥
रतन कटोरन मेवा मोदक निज कर प्रियन पवाय ।
मिश्रित कन्द अधावट पय सुरभित सखि झारि पिवाय ॥
अँचवावति हँसि हेरि कटाक्षन सुछबि निरखि बलिजाय ।
अतर पान मालाउर अरुझनि अग्र सुकर सुरझाय ॥६७॥

मध्याह्न स्नान पद-

जनकलली रघुवर अन्हवावत ॥
निजकर लै उवटन उवटावत अंगन मलि मन भावत ।
कनकलता सुतमाल लपेटनि अंग सुछवि झलकावत ॥
महिगत वाग सरोवर तट पर कुंज सुयत्न घुमावत ।
जल छिरकाय सखी सब मिलकै सिय रघुनन्द जुझावत ॥

कौतुक करि जल केलि हेलि तट अग्र शृंगार सजावत ।
बालभोग करि रस बतरावनि आरति करत सुहावत ॥६६॥

दोहा- तेल उबटि अन्हवाय के कियो दिव्य शृँगार ।
ऋतु बसन्त अनुरूप वन दम्पति बैठे प्यार ॥
कछु शृँगार फूलन कियो अन्न पाय जल प्याय ।
पान अतर आरति नमन बागविहार सिधाय ॥६७

शृंगार बन-

बाग विहार— बाग बिहार करन चले प्यारे ।
श्री नृपनन्दन जनकनन्दनी रूपगुणन में दोउ उजियारे ॥
सखियन करि शृंगार अंग २ पुनि पिय प्यारी के शृंगारे ।
यूथ २ सखि चलि संग में है गज रथ ऊपर असवारे ॥
कोउ सखि शिरपरछत्र किये हैं शुभ्रचँवर कोउ लिये करधारे ।
अपर सखी लिये बहुत सौज कर पहूंचे जाय बाग के द्वारे ॥
सखियनयुत गज रथते उतरे बागेश्वरि सुनि दौरि सिधारे ।
यूथ अनेक संग सखियन लिय पूजन के सामा करधारे ॥
पट पावड़े दै भीतर लैगई रतन वेदिका पै बैठारे ।
धूपदीप आदिक विधि करिकै सखि पूजे दोउ फिरत खिलारे।
कहुँ दोउ पुष्प उतारि कमल कर थाक थाक धरि न्यारे न्यारे ॥
रचि २ भूषण विविध रंग के निज २ चतुराई विस्तारे ।
प्यारी पहिरावति प्यारे को प्यारे प्यारी के अंगधारे ॥

मोर हंस सुक सारि पढावत मृगी झुन्ड रस चरित अपारे।
कुन्जन मधि कहुं छूट फुहारे ग्रीषम पावस सम सुखसारे ॥
कुन्जेश्वरि फल ढेर दिखाई पावत प्रेम प्रमोद अपारे ।
फल रूपक हँसि अंग बखानत लपटि झपटि कहुं कुन्जनिहारे॥
कहुं फूलन के गेंद उछारत कहुं जलकेलि करै मत वारे ।
बिबिध विहार बाग वन कुन्जन करि पुनि अग्र महल पगधारे॥६८

किये दोऊ राजत सुमन शृंगार ।

बैठे कनक महल आगन बिच सुमन गुच्छ कर धार ॥
प्यारी के शिर सुमन चन्द्रिका पियशिर कलँगि सुधार ।
रसिक अली सिय रघुबर छबि पर वारिय बहु रतिमार ॥६६
हैम महल के सुभग कुन्ज में प्रिया प्रेम लम्पट सुकुमारे ।
कबहूं इकटक मुखछवि निरखत श्रमसीकर लखि करतबयारे॥
कबहूँ निजकर अलक सँवारत अधर चूमि अतिहोत सुखारे ।
कबहूं निजकर चरण कमल लेइ मुख निरखत तामें हँसि प्यारे॥
निज करतल पर राखि प्यारि पदयावक चित्रको करत विचारे
निजकर कमल कठोर समुझि जिय धर२ धरकत हियभय भारे॥
अस न होय प्यारी के पदतल दरकि जाय लगि हाथ हमारे ।
चूमि२ निज नयन लगावत डरि २ चित्र महावर धारे ।
रूप देखि निज दृष्टि लगन डर वारि २ जल पियत दुलारे ।
दृष्टि दोष अपने पर लेके बारम्बार होत वलि हारे ॥
कबहूँ पुष्प बिभूषण रचि२ पिय प्यारी अँग करत शृंगारे ॥

प्रिया रूप में अति अशक्त ह्वै होन चहत नहिं पलक हुँन्यारे ॥
समय जानि गुरु नारिन आवन अति कलेश युत दुरत दुखारे ।
प्रिया प्रेम परतन्त्र स्वामिलखि अग्रअली तन मन धन वारे ॥१००

घूम घुमार गुलाब को घांघरो पीत चमेलि कि ओढनिभीनी।
कंज के नील कसे कल कंचुकि पीत जुही कि संजाव जोदीन्ही॥
चम्प के हार कनेर के चन्द्रिका देखि के चित्र भईरति हीनी ।
सरयुनिकुन्ज में रामसखे पिया फूलश्रृंगार सियाछवि कीन्ही१०१

कीन्हें श्रृँगार गुलाब के फुलन साँवरो फूलिकै फूलन जोहै ।
कंचन धाम में धाम गुलाब को छूटि सुगन्ध दिशानकियो है॥
चम्पकली सितियान के वीच में पंकज नीलकली जिमि सोहै।
राम सखे सरयू के लतान में रूप वितान तन्यो मन मोहै ॥१०२

आजु गुलाब महल बिच दम्पति राजत सुन्दर वेष कियेरी ।
सरयू तीर कुञ्ज सुख पुञ्जन विहँसत दोउ गलबाँह दियेरी ॥
फूलन के गहने अँग शोभित मनमथहूं को मान लियेरी ।
मोहनि नित्य दरत आनन्द में प्रेम वरुणी छाकि हियेरी ॥१०३

ग्रीषम ऋतु का सरयू बिहार

जल बिहार विहरत सीता संग सुन्दर वर रघुराई हो ।
ग्रीषम काल तुषार सदृस मनु सरयू सुभग सुहाई हो ॥
चारुशिलादि सखीगण साथै शोभा वरणि न जाई हो ।
न्यारी २ नाव सबन की सीतल सौज भराई हो ॥

लेह्य चोष्य फल बिविध भाँति लिये सौरभ वरणिन जाईहो ।
रहसि, कोट रचि नाव मध्य तँह सौज सकल सजवाई हो ॥
करन लगे जल केलि बिविध विधि जल सीकर वर्षाई हो ।
कमलनि मारि कमल्न कर झेलत लाघव लेत बचाई हो ॥
लपटि झपटि कटिपट कर झटकत केलि करत छवि छाई हो ।
कमला विमला मानसजा मिलि रचना विधि प्रगटाई हो ॥
अद्भुत कला केलि जल विहरे लोचन लाल लखाई हो ।
सीताराम रसिक रस रंग मग ललित बसन सजवाई हो ॥
विविधि फूल फूले कुन्जन में केलि करत मनभाई हो ।
अग्रअली तेहि बाग बिहारन सिय रघुबर सुख पाईहो ॥१०४

श्री प्रमोद वन बिहार

देखो सखि आवत रास बिहारी ।
सरयू तीर शृँगार बिपनते अति अनूप छबि न्यारी ॥
सीताराम मनोहर जोरी चितवनि की बलिहारी ।
कुन्डल अलक हलक बुलाक की दलकत हृदय हमारी ॥
संग सखी सोहैं अलवेली बनी ठनी छबि न्यारी ।
सुमन शृँगार किये नख शिख लौ निज कर स्याम सँवारी ॥
प्रभु आगे सखि खेलति आवैं फूलन गेंद उछारी ।
झुकिर लेति परसपर मारत लखि अनन्द पिय प्यारी ॥
आये दम्पति राम चरण सखि सुमन शृँगार उतारी ।

नख शिख मनि भूषण श्रृँगार करि सिंहासन बैठारी ॥१०५

परस्पर पिय प्यारी करत श्रृँगार ।

चन्द्र मुखी अरु चन्द्रकला दोउ देत सुधार सुधार ॥
क्रीट चन्द्रिका ललित मणिन मय शिरधरि करन सुधार ।
जनुघन दामिनि ऊपर राजत रबि शशि ज्योति अपार ॥
कुण्डल करनफूल बुलाक नथ और बिबिध मणि हार ।
कटि किंकिनि उर पदिक जटित नग नूपुर अति रवकार ॥
नील पीत अति रुचिर बसन तन पहिरे घूम घुमार ।
नटनि वेष यह सिय रघुबर को रसिक अली वलिहार॥१०६

सिंहासन राजत सिय रघुबीर ।

कोटिन भानु प्रकाश सिंहासन कोटिन शशि सम सीर ।
कोटि काम रति छबि निन्दत दोउ स्यामल गौर शरीर ॥
मणि बहुभाँति बिभूषण शोभीत नील पीत पट चीर ॥
बहु सखि धूप कि युक्ति बनावहिं बहु सखि दीप सजीर ।
बहु सखि रचि नैवेद्य लगावहि बहु सखि लीन्हें नीर ॥
बहु सखि मुख मञ्जन पट लीन्हे बहु सखि लीन्हे बीर ।
वहु सखि छत्र व्यजन चामर लिये बह सखि करत समीर ॥
बहु सखि बाजन विविध बजावहि तालदेत अति धीर ।
रामचरण सखि गौरी गावहि मधुरे स्वर गम्भीर ॥१०७

रास आरती

आरति करिये सिय वरकी, नख शिख छबि धरकी ॥

मृदुतरवन में अधिकललाई, हासविलास न कछु कहिजाई,
चितवनि की छवि अति सुखदाई, मनही मन फरकी ॥
नील पीत अम्बर अतिराजै, मुखनिरखत सारदशशिलाजै ॥
तिलक झलक भालन पर भ्राजै, कुम २ केशर की।
कर्णफूल कुण्ड हलकत है, चन्द्रहार मोती झलकत हैं,
कर कंकण की छवि चमकत है, जगमग दिनकर की ॥
सिंहासन पर चँवरढुरत है, झाँझ बजत जै जै उचरत है,
सादर अस्तुति वेद करत हैं, लुटरनि अनुचर की ॥१०८

जय २ श्री वन प्रमोद रसिकन सुखदाई।
सरयु तीर दिव्य भूमि वेलि लता रहि झूमि फूलन प्रति-
भँवरा अति गुन्जत मनभाई ॥
कुञ्ज २ प्रति अनूप विलसत तहँ युगल रूप जनक लली-
रघुनन्दन मधुर २ ताई ॥
चन्द्र कला बिजयादि नागरी नवीनी अति मधुर-
यन्त्र लीन्हे कोइ सप्त स्वर जमाई ॥
गावहिं सब दिव्य तान सुनहि लाल अतिसुजान—
रास सरस भीज मन्द मन्द मुसुकाई ॥
अग्र अली बिपिन राज वह सुख तहँ नित समाज—
जानत कोइ रसिक भेद जिन यह रस पाई ॥ १०९ ॥
रागधनश्री—नामो जानकी जगत मनि रूप कमनी।
वदन विधु रुचिर रद हासईषद सुखद राम हृद—

कामकी ताप समनी ॥
नमो सुक नासिका नैन मृग मीन छवि भालभर—
भाग सौभाग्य दरसै ।
प्रेम पूरित बैन अलक इक उर ऐन सहज—
अलवेलि पिय मनहि करषै ॥
कण्ठ सुकपोतिनी उरज उत्तंगिनी सिंह मधि—
देश सम श्रोणि सोहै ।
जंघ कदली कर्भ गर्भ गति हरति इभु अदुति—
नख चन्द्र उपमा न कोहै ॥
विशद सतकुम्भ सम भाति आभा वपुष मनि—
खचित विविध भूषननि धारी ।
व्यालि वेनी दण्ड अंग दीपति चण्ड सुभगता—
सनिरही राम प्यारी ॥
भरत संगीत गन्धर्व कला कोक निधि सुघर—
वर नारि सब शीश नावैं ।
रुद्र ब्रह्मादि कवि अवर केते कहौं स्वामिनी-
अग्र नहि पार पावैं ॥११०॥

जय जय रघुनन्द चन्द रसिक राज प्यारे ॥
अंग २ छवि अनंग कोटि वारि डारे ।
बिहरत नित सरयु तीर संग सोहै सखिन भीर-
सिया अंश भुजा मेलि अवध के दुलारे ॥

कोई सखि छत्र लिये व्यजन लिये कोई-
युगल सखी चँवर लिये करत प्राण वारे।
सुन्दर सुकुमार गात पुष्पमाल सकुच जात परसत-
भयभीत होत रूप के उज्यारे ॥
नख शिख भूषण अनूप यथा योग यथा रूप-
कोटि चन्द्र कोटि भानु निरखत दुति हारे।
मन्द २ मुसुकुरात प्यारी संग करत बात देखि२ अग्र अली-
तन मन धन बारे ॥१११

शरद पूर्ण बिमल चन्द विमल महि अनन्द कन्द-
राम चन्द्र रास रच्यो देखन सखि धाई।
सरयु पुलिन विमल कूल फूले बहु रंग फूल कमल-
चम्प केतकी कदम्ब सुरभी छाई॥
बोलहि सारो मयूर कोकिला मराल कीर गूंजहि-
अलि सकल राग रागिनी बनाई ।
किन्नरि अप्सरा गान मुर्छन स्वर ताल तान धरहि-
भूमि तरुन लतन नीर गगन जाई ॥
बाजहि मृदंग जंग सारँगी तमूर चंग बीण वेणु-
अदिक स्वर तालगति सुहाई ॥
युग २ सखि बीच एक मध्य राम नृत्यत संगीत-
ताण्डवी सुढंग गति अनेक ल्याई। गावसि षट—
राग राम रागिनि स्वर ताल ग्राम सब धरि सखिरूप-

राम रास हेतु आई।
जानकि रघुनन्दन मन भावित भै रैनि ब्रह्म-
रामचरण सर्व जीव परमानन्द पाई ॥११२

देखो सखि अति अनन्द रास रच्यो रामचन्द्र-
रजनी छवि छिटक रही शरद चन्दनी।
बहु सखि मण्डलाकार नृत्य गान स्वर सम्हार नृत्यत-
रघुनन्दन मिथिलेश नन्दिनी॥
कंचन मनि लसत भूमि नृत्यत पग चपल घुमि-
नूपुर छम छनन छमक छमक छन्दनी।
कमला विमलादि तान रागा अनुगादि गान करहि-
राग रागिणी कला कलन्दनी॥
चन्द्रकला वीणा मूर्चंग धुनि मृदंग मधुर अपर सखि-
सितार तार तर तरंगिनी।
ताधिग धिग धिग ताधिग धिग २ ताधिन्ता धिन्घृकट-
धृकट धिधि कट धिधिकट प्रवन्धनी॥
उघटत संगीत राग ताल मूर्छनादिग्राम हाव भाव पानि-
मुरनि नैन खंजनी।
रामचरण युत समाज मेरे हिय में विराज यह विहार-
नित अखण्ड रसिक मण्डनी॥११३

सखिन विच नृत्यत युगल किशोर।
विपिन प्रमोद सरोजा तट पर दिव्य भूमि चमकत चहुँओर॥

चक्राकार रास मण्डल रचि राग रागिणी के कलशोर ॥
बिमला चन्द्रकलादि रँगिली बीण मृदंग लिये करधोर ।
चारुशिला सुभगा हेमा लिये मुरज मुचंग किन्नरी जोर ॥
चन्द्रा चन्द्रवती मिलि गावति क्षेमा स्वरहि भरत रसबोर ।
मदनकला करताम बजावति सारंगी नन्दा टंकोर ॥
पियशिर सुभग सुक्रीट बिराजै चन्द्रिका सीता के शिर रोर ।
चन्द्रहार प्यारी उर चमकत पिय उर मोतिन माल उजोर ॥
कोटि २ रति काम विमोहन नटवर वेष श्याम अरु गोर ।
रूप माधुरी कहिन परत हैं अँग २ छबि के उठत हिलोर ॥
कर से कर दोऊ मिलि धारे नयनन शैन चलत दुहुँ ओर ।
कबहुं अधर रस पियत परसपर रस मतवारे दोउ चितचोर ॥
प्यारी हाव पियामन करषत पिय के भाव प्यारी निज ओर ।
दोउ रस सिन्धु मगन रस लम्पट अग्रअली नहि चाहत भोर।११४

झमकि २ ललि लान कि नटनियाँ ।
निरखि २ अलि हिय कसकनियां ॥

बाछत मृदंग बीण सारंगी तमूर झीन अलगोजा वंशी-
वाजै बाजत पैजनियाँ ।
मृगी नाचै चन्द पर शेष नाचै शम्भू पर कबि नाचै बिम्ब पर-
मन के हरनियाँ ॥
कर सोहैं कर धरे थिरकि २ अलि तातार्थेई २ तार्थेई कहनियाँ ।
नवल अली की लली बन्धकि वंधनियाँ रसिक शिरोमणि सो-

रस कि पियनियाँ ॥११५

प्रीतम का गान- प्यारी तेरे नयना मदनसर वारी।
रतनारी कारी कजरारी चन्द्र वदन पर अति छवि धारी॥
चितवनि बाँकी तिरछी प्यारी ममहिय के घायल करि डारी।
मीन कमल खंजन दुति हारी सब विधि प्राण अधार हमारी॥
हँसनि नटनि अरु अंग मरोरनि देखि २ में जाउँ बलिहारी।
रूप उजागरि अग्रतियन में हौ तुम श्री मिथिलेश दुलारी॥११६

प्यारी का गान- प्यारे मुखचन्द विलोकहु सजनी।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्लल नयन कमल दल अति छबि छबनी॥
नाशामणि सु अधर पर राजत मनहुँ कमल दल शुक्र उदवनी।
कल कपोल पर अलकै छूटैं चन्द उपरमनु बशि बहु अहिनी॥
कटि कछनी काछे बने आछे पग में नूपुर अति मन हरनी।
मुरनि दुरनि अरुहँसनि नटनि में कोटिन काम करों निवछवनी।
रूप उजागर अग्रस्वामि मेरे मम हियके हैं प्राण सुजिवनी॥११७

सखी का गाना- रागकल्याण- बलिहारी सीता बदन की।
उज्वल अरुण परस्पर दीपति अधर विम्बफल रदन की॥
वेशर मुक्ता चपलहोत अति शोभा बीरी अदन की।
लोचन चारु चितै मधुवर्षत राम काम दुख कदन की॥
सची सहित शोभा त्रिभुवन की बारों भामिनि मदन की।
अग्रस्वामिनी विशद चन्द्रमुख सौभग हद सुख सदन की॥११८

प्यारी का गान- लाल तुम कर धरि बीण वजावो।

मैं भरि कण्ठ अलाप उचारों तुम स्वर संग मिलावो ॥
मैं प्यारी कहि गाऊँ तुमको तुम प्रीतम कहि गावो ।
मैं रघुनन्दन नाम धरों निज तुम सिय प्यारि कहावो ॥
कटि लहँगा शिर धारि चन्द्रिका मोहि कछु नाच दिखाओ ।
मैं करताल बजाऊँ रंग भरि तुम हँसि हाव दिखाओ ॥
मैं करजोरि मनाऊँ तुमको तुम कसि भौंह खिसाओ ।
मैं सौन्दर्य सराहि परों पग तुम हँसि कण्ठ लगाओ ॥११६

आकरष्यो जहँ तहँ नर नारी ।

सब सखियन मन पिय अँग धारीकरों मनोरथ रुचि अनुसारी॥
सबके रुचि लखिके सिय प्रीतम धारयो बहुत रूप मनहारी ।
जस २ जाहि मनोरथ रहेऊ तस तस करि सब कियो सुखारी॥
अस्थावर जंगम जो जहँ लौं आनन्द मुरछा में नर नारी ।
अद्भुत रास रच्योपिय प्यारी संग सखिन लिये अग्रदुलारी॥१२०

रसिक दोऊ सरयू कूल चले--

रास श्रमित ह्वै संग सखिन लै दम्पति दिय भुज गले--
करन लगे जल केलि विविध विधि दोउ रस रंग रले ॥
प्रीतम डूबि प्रिया पद गहिके ऐंचि लेत जल तले ।
प्यारी कर कमलन ताड़न करि जल पिय आँखि दले ।
प्रीतम के गति भूलि गये सब दोउ कर आँखि मले ।
काहू के कटि बसन छोड़ि पिय तट पर आय चले ॥
वह सखि ने अति लाज श्रमित ह्वै जल से नहिं निकले ।

पुनि सिय ने पिय से पट लैके दइ सखि हाथ तले ॥
करि जल केलि प्रिया प्रीतम दोउ जल से आय थले ।
करि शृंगार अग्र सखियन युत आय गये महले ॥१२१॥

श्री अशोक वन

श्री सरयू तट वन अशोक मधि रास रच्यो श्री अवध विहारी ।
चहुँ दिशि मणिमय कोट विराजै मध्य कुंज बहु न्यारी न्यारी॥
ताके चहुँदिशि पादप राजै त्रै सम्पति युत अति रुचि कारी ।
ता आगे बहु लता कुंज हैं जाति २ के न्यारी न्यारी ॥
ताके चहुँदिशि कृत्रिम पादप जाति २ मणि के छबिकारी ।
ताके चहूं दिशि गमले सुन्दर बहुत भांति के धरयो सुधारी ॥
ताके चहुंदिसि मोतिन झालर मध्य में रचना बहुत प्रकारी ।
मध्यभूमि बहु रंग मणिन के बेली बुटी विविध प्रकारी ॥
तापर जाजिम स्वेत बिछे हैं चन्द्र किरनि के अति छबिहारी ।
तामधि सिंहासन अतिसुन्दर स्वेत मणिनमय अति सुठिकारी॥
तापर बैठे युगल बिहारी श्री नृपनन्दन जनक दुलारी ।
गौर स्याम छवि को कवि वरणै कोटिकाम रतिदुतिलखिहारी॥
प्यारी के तन शुभ्र सुसारी प्यारे अंग जामा झलकारी ।
प्यारे उर मोतिन की माला चन्द्र हार सोहत उर प्यारी ॥
कण्ठ पोत प्यारी गल राजत पिय गल गोप बिचित्र सँवारी ।
बाहुन में अंगद सुठि सोहै कर में पहूँची अति दुति कारी ॥

कर्णफूल प्यारी श्रुति शोभित पिय श्रुति कुण्डल मकरा कारी।
प्यारी के शिर मणिन चन्द्रिका पिय शिर क्रीट भानुमदहारी॥
बिमलादिक सखि चहुँ दिशि सोहैं मध्य नटनलागे पियप्यारी।
कोइ सखि वींण मुचंग काहू लिये जलज तमूरा कोइ२ धारी॥
बहुत सखी लिये बहुत यंत्र हैं थेइ २ कर नाचत बहु नारी।
छम २ नूपुर चरनन बाजै मनुमोहनी मंत्र ध्वनि कारी॥
गावति सब रागन रागिनि में स्वर सुनि इन्द्र वधू मनहारी।
जब प्यारी प्रीतम मिलि गावत ताथेइ २ औरन प्यारी॥
स्वर्गसात पाताल व्यापि गयो परमानन्द के वह्यो पनारी।
महारास सब दिशि में छायो आकरष्यो जँह तहँ नरनारी॥
सब सखियन मन पिय अंगधारी करो मनोरथ रुचि अनुसारी।
सब के रुचि लखि के प्रिया प्रीतम धारयो बहुत रूप मनहारी।
जस२ जाहि मनोरथ रहेउ तस २ करि सब कियो सुखारी॥
अस्थावर जंगम जो जँहलों आनन्द मुरछा में नर नारी।
अद्भुत रास रच्यो पिय प्यारी संग सखिन लिये अग्रदुलारी।१२२

आजु सखी लखु रास मण्डल में नृत्यत हैं रसरंग भरे।
वन अशोक सम भूमि खचित मणि रवि शशि—
अमित प्रकाश करे॥
श्री रघुनन्दन जनकनन्दनी अमित मदन छवि अंग धरे॥
क्रीट मुकुट चन्द्रिका मनोहर भूषण अँग २ नगन जरे॥

कुण्डल मकर हार मोतिन के वैजन्ती बन माल गरे।
नाशा मणि झूलत अधरन पर केशर चन्दन खौर करे॥
मोतिन मांग भरी वर वेनी कुटिल अकल जनु भ्रमर खरे।
मणि कंकण पहुँची कर चूरी बाजू बन्द जराउ जरे॥
नीलपीत पट लसत दोउन अँग स्याम गौर मिलि लगत हरे।
किंकिनि मुखर अरुण कर पल्लव पग नूपुर झनकार करे॥
थेइ २ करत भरत स्वर अलिगन निरतत पिय सँग अनँदभरे।
बजत मृदंग ढोल सारंगी झाँझ मजीरा बीन बरे॥
युग २ सखिन बीच रघुनन्दन करसों कर धरि लसत खरे।
करि मण्डल निरतत सखियन सँग निरखि मदन—
बहु मुरछि परे॥
पूरि रह्यो बन मण्डल सोरस अचर सचर चर अचर करे।
सुर मुनि अगम सुगम रसिकन को रसमाला—
यह ध्यान धरे॥१२३

साँवरे सलोने जु झमकि झुकि आवैरे।
सरद की रैन पिया अधिक सुहावैरे॥
मन्द मुसुकाय प्यारी जू के गल वाँह दिये,
ऊँचे स्वर तान ले मधुर स्वर गावै रे।
रहस मण्डल आली संग लली कर धरि,
छम २ छननन नूपुर बजावैरे॥

कटि लच कनि ग्रीब मुरनि घुरनि नैन,
कुण्डल हलनि मनि क्रीड झलकावैरे।
नवल बिहारी प्रिया सखी संग रस बस,
अलि संग लता कुन्ज मन ललचावैरे ॥१२४

नटत सियाजू पिया लेत बलि हरिया।
छम छम छमकत नूपुर बाजत,
पिय मन मोहति कहत हरि हरिया॥
चम्प फूल पर घन सोहत छबि,
तापर नखत दामिनि फुलझरिया।
लेत तान जब प्यारी नइ नइ,
बाह २ कहत पिया जु स्वरभरिया॥
नवल बिहारि पिया विरिया खिलावत,
जय-जय कहत सखिन मन हरिया ॥१२५

नटत छबीले छैला सिया मन हरिया॥
जब पिया घूमत बागा फहरत-
सिया मन कहरत मदन लहरिया॥
कम्पत चलत पसेवनि अँसुवा-
उमगत मनहु सावन की लहरिया॥
गिरि २ लेत पिय तान अलापत-
मुरछि परत सखि सिय थर हरिया।

नवल बिहारि प्रिया पिय रस लूटत-

प्यारी पर छिरकत चन्दन फुहरिया ॥१२६

आज जनक दुलारी रसरंगन भरी।

चम्प के बरनवारी वसन सुरंग वारी-

वदन मयंक बारी रूप अगरी ॥

अरुण अधर वारी बोलनिमधुर वारी-

तिरछि चितौनी सर मारति खरी।

वेसर सुपास वारी भुजन मृणाल बारी-

उरज उत्तंग वारी मदन जरी ॥

मोतिन के हारवारी मध्य छीण भाग वारी-

जघन गम्भीर वारी भावन भरी।

गमन मराल वारी नूपुर झनकार वारी-

रसमाला उर वारी मोह्यो मन री ॥१२७

जाजवन्ती दादरा—

कित गयो मेरि आली रास को रमैया ॥

साँवरो छबीलो छैला मेली२ कण्ठभुज,

मीठी २ बातैं-कहि हिय को हरैया।

एक सखि आगे २ आप वाके पाछे २-

कुंजन प्रवेश कीनो हमहुँ लखैया ॥

माइ बाप गोरे २ भाई वाके गोरे २-

आप कारो २ वारो फन ज्यों डसैया ॥

मोको तो न सूझै कछु बूझै न विकल भई,
साँवरे कि छबि हिय बिच करकैया ॥
आँसुवन भीजै मेरी अँगिया उतारो सखि,
हार को बहावो कहा सुख के देवैया ।
तियन विकल जानि आये रघुलाल पिया,
डूबत बिरह बारी पाये सुखनैना ॥
आरति उतारैं सखिवारैं तन मन धन,
जनक लड़ैती संग राजैं मुद छैया ।
कोउभरि अंक कोउ वदन भयंक लखि,
कोउतिय कहैं पिय बड़ै निठुरैया ॥
रसिक अलि के प्रान प्यारे रघुलाल सिया-
खेलत नवल रास मण्डप दिपैया ॥१२८

पिया हिया लागि रहो न्यारे जनि जाउरे ॥
गुरुजन के लाज काज हेरो जनि भोरे पिया-
सुमन के सेज सिया रस वश छाउरे ।
पइयाँ परों तोहि मैंतो निशिपति निशदिन-
राकायुत नित हित अवध बशाउरे ॥
कुल गुरु नीत हम पूजन सु करि हैं-
उदै जनि होउ मैंतो दुःख हिय पाउँरे ।
नवल विहारी पिया विछुरत संग प्यारी-
मरनोसो भलो जिया जनि तड़फाउरे ॥१२९

कर धरि सिया नटै पियामुख हेरि हेरि।
चहुँ दिशि अलिगन छम छम छमकत
मन्द मुसुकनि में मदन रस भरि भरि ॥
फहरत बसन सुगन्ध छहरति अति
मोति माला टूटत सखिन उर वेरि वेरि।
उरज गहत कर अधर चूमत जब
पूछत रसीली बातैं आली मुख हेरि हेरि ॥
नवल बिहारी प्रिया नूपुर के सोर सुनि,
पिय रस लूटत वाँधत बन्ध वेरि वेरि ॥१३०

धिधि केटे धिधि केटे बाजत मृदंग ॥
स्वरनि भरत उघटत तेथे तत्ता थेई,
लाग डाट सम तान तरंग।
चारनि चरनि धरनि उर भावनि,
दृग मोरनि तस चलनि उमंग (सुअंग) ॥
रसिक अली रघुबीर साँवरो,
नटत अटत मुनि उरनि अनंग ॥१३१

ठुमरी—आज रस केलि मचाऊँगी।
इन पिय प्यारे को रस बश करि हिय तपनि बुझाऊँगी ॥
करि नव सप्त शृंगार मनोहर अंग २ भूषण सजिकै सब।
गाय बजाय लगाय लाल उर, संग नचाऊँगी ॥

तनु२ तुम२ तनननननन छुम छुम छुम छुम छुम छनननननन छुम ।
तदियाना दिरना तुम तन ननदिर्ना तुम गति दरसावोंगी ॥
सुनि सिय वानी सखिन सुहानी हिय हरषानी मन ललचानी ।
ज्ञाना अलि यश गाय गाय सिय पिय मन भावोंगी ॥१३२

छूम छननन पग नूपुर बाजै नटत छैल छवि रंग भरे ॥
विच २ स्यामा स्याम मनोहर युगल-युगल गल बांह धरे ।
छोरनि गहनि कहनि कछु हँसि२ अरस परस छवि फन्द परे ॥
कञ्चन लता तमाल तरुन तरु रस विहार जनु फूलि फरे ।
ज्ञाना अलि सुख स्वाद रसिक जन पावैं ते कबहूं न टरे ॥१३३

राग परज—राजदुलारी रस में रोस न कीजै ।
बदन सरोज नवल रिस कीन्हें, कला, उन लखि लीजै ॥
अमित कला बर बदन साँवरो चन्द्र, हँसनि कत दीजै ।
रसिक अली प्यारी रघुबर की हँसि प्यारो रस भीजै ॥१३४

दोहा-धन्य चारुशीला अली चतुराई की खान ।
पिय प्यारी की प्रान सी तुरत छुड़ायो मान ॥
रीझि रहे राघव हिये तनमन अरप्यो तोहि ।
ताते पद गहि रसिक अली नित्य समाज समोहि ॥
दिन २ दिन रस बढ्यो रीति अलि जानि पियाकी ।
तेरे बश पिय भये कहो श्रीचारुशीलाजू ॥
सब रस ऐनी आहि झपटि पिय राम मिलाजू ।

मिले राम पिय सत्य अब शंशय मन मति राखु ॥
रसिकअली की स्वामिनी बुद्धि, बानि सुभाषु ॥१३५

मूदत नैन राम सीता के चन्दा तन चितवन नहि देत ।
मागै जो बल्लभा मृगन को सारँग धर सकुचत यहि हेत ॥
प्रिया वचन उल्लंघ सकै नहि उडुपति हते प्रलै ह्वै जाय ।
दोउ कठिन जानि रघुनन्दन हाँसी मिस यह रच्यो उपाय ॥
जाचै जो जानकी कदाचित इन्दु कुरंग वेगि देउँ आनि ।
अति अधीन जनावत तिय के अग्र स्वामि याते यह मानि ॥१३६

रूठो जी राम गुशाँइ भले-भले ।
पायो राजपट दशरथ को गहि लीनी ठकुराइ ॥
जाय कहू मिथिलेश ललीजु से, निकश जाय गुमड़ाइ ।
अग्रअली के शिर पर चहिये श्री शिरध्वज की बाइ ॥१३७

कवित्त

जाय कहूं मिथिलेश लली से आज अबै निकसै गुमड़ाई ।
भोर सुभाय सुनैंगि जबै मन मान ले ऐठि छिपैं कहुं जाई ॥
मेरे विना फिर मान टरै नहि कोटि करो पिय यों चतुराई ।
ताते कहू अबहूं सुनि लो सौन्दर्य गुमान किये न भलाई ॥१३८

दोहा—प्यारी तू प्यारी अहै सुघर सुधारी रूप ।
मोते बोलि न आव अब परों प्रेम तव कूप ॥
रसिकअली पिय उर लगी प्रीतम लई लगाइ ।
गये अपनपौ भूलि दोउ या तो प्रेम सुभाई ॥१३९

रसिक दोउ नृत्यत रंग भरे।
विपिन अशोक रास मण्डल बिच जनकलली रघुलाल हरे ॥
अमित रूप धरि करि कछु चेटक युग-युग तिय मधि श्यामअरे।
क्रीट मुकुट की लटकि चन्द्रिका झुकनि मदन मद दूर करे ॥
मोतिन हार युगल उर राजत कुन्द मालती माल गरे।
पग नूपुर मजीर मधुर धुनि कंकन किंकिनि मुखर तरे ॥
मुरज मजीरा ढोल सारंगी अरु मुरली के टेर करे।
विविधि ताल संगीत अलापत ततथेई २ कहत खरे ॥
कबहुँ मधुर मुसुकाय के दम्पति निरखत छबि भुज अंश धरे।
कबहुँ सुरति करि ब्याह समयकी फिरति भांवरी रसिक बरे ॥
यह रस रास महासुख सागर द्वादश योजन लो सवरे।
रसमाला भरि पूरि रही बन जग कोइ बुन्द प्रकाश करे ॥१४०

देखत अवध को आनन्द।
हरषि बरषत सुमन दिन २ देवतनि को वृन्द ॥
नगर रचना शिखन को विधि तकत बहु विधि बन्द।
निपट लागत अगम ज्यों जल चरहि गमन सुछन्द ॥
मुदित पुर लोगनि सराहत निरखि सुखमाकन्द।
जिन्ह के सुअलि चख पियत राम मुखारविन्द मरन्द ॥
मध्य व्योम बिलम्बि चलत दिनेश उडुगण चन्द।
रामपुरी बिलोकि तुलसी मिटत सब दुख द्वन्द ॥१४१

विवाह लीला विहार

दोहा—लीला बिबिध विनोद में, पुरुष रूप सखि कीन्ह ।
जेहि सेवा में जश चरित, तश करि प्रिय सुख दीन्ह ॥१४२

प्रभु जी हमको आज्ञा दीजै ।
यज्ञ पूर भयो पुण्य तुम्हरो नृप को दर्शन कीजै ॥
सुनहु आज मिथिला पुर तें इक आयो है परचारी ।
सीय स्वयम्बर अखिल नरेश्वर कौतुक ह्वै है भारी ॥
पंगति रथ ऐहैं पुनि वहु तहँ ह्वै है बडो समाज ।
अग्रस्वामि दोउ हँसत कुँवर बर संग चले ऋषिराज ॥१४३

सखि में सपनों सुन्दर पायो ।
इन्दु वदन राजिव दल लोचन गाधि सुवन संग आयो ॥
स्याम बरन तन कोटि भानु दुति शोभा सब जग छायो ।
मोद भयो मिथिलापुर बासी मो मन अधिक सिरायो ॥
रघुकुल कुँवर अयोध्या नायक भुजबल धनुष चढ़ायो ।
नृप सब सभा ठगी सी ठाढ़ी गर्भिन गर्भ नशायो ॥
पूरण भयो पिता प्रण मम सखि सब सन्देह नशायो ।
अग्र स्वामि अरविन्द बन्धु उदै मिलिहैं पति मन भायो ॥१४४

राग-मारू—अरी हो राम रंग रची ।
तात हमारो पन कियो तोरन धनुष कठोर ॥
कोमल करतल साँवरो सखि मूरति मधुर किशोर ।

राजसभा ऐसे भई ज्यों उडुगन में चन्द ॥
बिधना बिधिसो निर्मयो अलि मोहन मन को फन्द ।
लोक वेद की लाज सखीरी यद्यपि दुस्तर आहि ॥
रूप निधान देखि रघुनन्दन धीरज धीरज नाहि ।
ऐसी मो जिय उपजीरी चाप चढ़ायो कोइ ।
अग्र स्वामि के हाथ विकानी होनी होय सो होइ ॥१४५

राग-मारू—सखी मोहि राम भावै ।

नृपति निकर निरस सब लागै कोऊ दृष्टि न आवै ॥
उडूगन उदये होत ज्यों आली चकोरी चैन न पावै ।
एकहि अमृत आव उदये ते चन्दा तपनि बुझावै ॥
राजा बन राजी से लागत पौरुष नहि दर्शावै ।
रघुनन्दन चन्दन द्रुम मानो अन्तर जरन जुड़ावै ॥
भावै नही पितापन सजनी सारँग पानि सुहावै ।
अग्र स्वामि मोहनी मन्त्र लिये चितवत चितहि चुरावै ॥१४६

राग-कान्हरो—तात प्रन काहे को कियो ।

कठिन पिनाक रामकर कोमल धीर न धरत हियो ॥
मधुर मूर्ति आनन्द कन्द सम नाहिन और वियो ।
वक्र चितवनी सांवरे सखि चित बित चोर लियो ॥
रघुपति तजि जे करै आन रति धिग २ जीव जियो ।
अग्रस्वामि रस बश भइ आली मो मन मोललियो ॥१४७

होरी-ताल—येरी मैं हूंगी अनुरागि चरण की ॥

अंकुश कुलिश कमलध्वज चिन्हित अरुण वरण—
अघ तिमिर हरणकी ।

जो पद परसि सरस दुर्लभ गति—
होत भई ऋषिराज धरणिकी ॥

नूपुर नदन मदन सुनि लज्जित—
राजत जीवन रसिक जननकी ।

अग्रअली कोइ सुभग सरोरुहनखत—
कान्ति मणि माणिक बरनकी ॥१४८

सौमित्री कहे सुनहु श्याम घन । हूं जानत वैदेही को पन ॥
राजन की यह रीति वाम बहु दाशन लिखि नहि आवै ।
यह डरनि डर जानकी रघुपति रामहि हृदै बसावै ॥
राजिव नैन अनुज के वैन सुनि ताको यश सब जान्यो ।
यक पतनी ब्रत लियो रीझि कै अग्र भूमि धरिपान्यो ॥१४९

राग-सारंग—जब रघुपति कर धनुष उठायो ।

पुलकत तन रोमाञ्च गाधि सुत पुरति प्रेम भरि आयो ॥
को बड़नमित न मुख भूपति कर जानकिमन तरसायो ।
तोरयो चाप सभा में तिहि क्षिणि संशय सबै नशायो ॥
मगन शब्द सुनि जामदग्नि मन अहंकार सुवहायो ।
तोषे अमर अवनिजनु फनिपति अग्रदास मनभायो ॥१५०

आये हैं दोउ राज कुँवर वर सुन्दर स्यामल गोरे।
आगे विश्वामित्र महामुनि संग हंस के जोरे॥
कहा कहूँ गुणरूप आगरे लगत दिनन के थोरे।
बड़े २ लोचन हैं अघमोचन शोभासिन्धु हिलोरे॥
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल धनुष बान कर जोरे।
आय जनकपुर मोहनि डारी नर नारिन चित्त चोरे॥
विश्वामित्र को यज्ञ सुफल कियो कठिन धनुष को तोरे।
जय २ कार भये त्रिभुवन में भूपन के मुख मोरे॥
अग्रअली प्रभु की छवि निरखें चितवन में चित्तचोरे॥१५१

राजति राम जानकी जोरी।

स्याम सरोज जलद सुन्दर वर—
दुलहिनि तड़ित वरन तनु गोरी॥
ब्याह समय मोहति बितान तर—
उपमा कहुँ न लहति मति मोरी।
मनहु मदन मंजुल मण्डप महँ—
छबि श्रृँगार शोभा इक ठोरी॥
मंगलमय दोउ अंग मनोहर—
ग्रथित चूनरी पीत पिछोरी।
कनक कलश कहँ देत भाँवरी—
निरखि रूप सारद भइ भोरी॥

इत्त वशिष्ट मुनि उतहि सतानन्द—
वंश बखान करैं दोउ जोरी।
इत अवधेश उतहि मिथिला पति—
भरत अंक सुख सिन्धु हिलोरी॥
मुदित जनक रनिवास रहस वश—
चतुर नारि चितवहि तृन तोरी।
गान निशान वेद ध्वनि सुनि सुर—
बरषत सुमन हर्ष कह कोरी॥
नैनन को फल पाइ प्रेम बस—
सकल अशीशत ईश निहोरी।
तुलसी जेहि आनन्द मगन मन—
क्यों रसना वरनै सुख सोरी॥१५२

मंगल आज जनकपुर माही।

पाणिग्रहण सीता रघुपति को नरनारी सब फिरत उछाही॥
मण्डित द्वार चौहटा वीथिन दिव्य दुकूलनि धाम उछारैं।
अति आतुर पग लगत न अवनी कहुँगज कहुँरथ अश्व शृंगारैं॥
शीश सेहरो रामचन्द्र के अग वानी कर तोरन लाये।
रुक्म पुहुप मुक्ता ले गोखनि नवल बधू अंजलि वरषाये॥
मण्डप तर बैठाय पटा दोउ वेद विहित सब कर्म कराये।
साखोंच्चार दुहुँ कुल गुरु करि कुँवरि कुंवर को हाथ गहाये॥

उतरासन की ग्रन्थि परस्पर दृढ़ वचननि बामैं अँग लीन्हीं ।
आगे प्यारी पीछे प्रीतम जातवेद कल भाँवरि दीन्हीं ॥
भूरि दान दे तोषि सकल सुर दुलहिनि सँग भीतर बैठाने ।
परदा ओट समागम पहिलो अग्रदास दासी सुख जानै ॥१५३

दूलह राम सिया दुलहीरी ।
घनदामिनि वर बरन हरन मन सुन्दरता नखसिख निवहीरी ॥
ब्याहविभूषण वसनविभूषित सखि अवली लखि ठगिसिरहीरी ।
जीवन जन्म लाहु लोचन फल है इतनोइ लह्यो आज सहीरी ॥
सुखमा सुरभि शृँगार क्षीरदुहि मयन अमियमय कियोहै दहीरी ।
मथि माखन सियराम सँवारे सकल भुवन छबि मनहु महीरी ॥
तुलसीदास जोरी देखत सुख शोभा अतुल न जात कहीरी ।
रूप राशि विरची विरंचि मनोशिला लवनि रतिकाम लहीरी ।१५४

शोभित सीताराम कनक मण्डप तरे ।
शिर सोहै सोने को मौर मञ्जु मुक्ता जरे ॥
परसत अमल कपोल सुमुक्ता कोर के ।
राजिवलोचन लोल कमल मानो भोर के ॥
सुरंग चूनरी के निकट पीत पट छुई रह्यो ।
मनहूँ अरुन घन मध्य चपलता चुई रह्यो ॥
सिय भूषण प्रतिबिम्ब राम छबि उर धरे ।
मनहुँ जमुन जल मध्य दीप दीपक वरे ॥

राम भुजा के निकट सीय भुज यों लसे ।
मरकत मानिकर खम्भ मनहुँ कंचन कसे ॥
राम भये घनश्याम सिया भइ दामिनी ।
मुनि भये चन्द चकोर चकित भइ भामिनी ॥
राम भये तन गौर सिया भइ साँवरी ।
सारद सी बुद्धि वन्त वधू भइ बावरी ॥
पुष्पन बर्षत मेघ मेदनी थर हरे ।
होत जनकपुर ब्याह राम भाँवरी फिरे ॥
राम सिया को ध्यान सदा शंकर धरे ।
ब्रह्मा रूप निहार इन्द्र पूजा करे ॥
यह छबि युगल किशोर सुमुनि जन ध्यावही ।
लखि लखि बिमल बिनोद वेद यश गावहीं ॥
तुलसी सीताराम सदा उर आनिये ।
राम भजन बिन जन्म वृथा करि मानिये ॥१५५

गोरी किशोरी दुलहिया हे दुल्हा राघो जी स्याम ।
देखे के पँवलों सँजोगवा हे वशि के येहि गाम ॥
लाली ललीकी चुनरिया हे अंग ललित ललाम ।
कटि में कसे वे केशरिया हे कोरन जरिकाम ॥
मौरी मणिन इन धरिया हे सिन्दूर सुख धाम ।
उन शिर टेढ़ी बगडिया हे मौर मोतिन दाम ॥
दोऊ कि दोउ नजरिया हे हिय करै कतलाम ।

कोन इन्हें लखि सखिया हे बिकिगै बिनु दाम ॥
प्रेमी जनों के पियरवा हे सन्तन बिसराम ।
मोद वशाले हियरवाहे सुख दम्पति नाम ॥१५६

राग–कल्याण

लाल भयो रोमांञ्च प्रिया को आगम जान्यो ।
अनँगरौर गये दौरि अजिर में
अति आतुर, ह्वै अंग राम पहिचान्यो ॥
मेघागम ज्यों नृत्य कलापी नूपुर धुनि मन मान्यो ।
सुख समाज सों मिली अग्रप्रभु तन मन एकता सान्यो ॥१५७

हिम ऋतु हर्म गर्म मनि को है ।
कीम खाप मखमल गिलमन्ह पर सिय पिय परिकर सोहै ॥
लै कोउ बींण प्रबींण सहचरी राग तरँग उमगोहै ।
अग्रस्वामि सुख निधि सीता पति रमि रमाय मन मोहै ॥१५८

तरुन तमाल वरन रघुवीर, जानकि कंचन की लता ।
सौ दामिनि नव घन सँग मानहु पुलकित प्रेम मता ॥
निरखत रेख जम्बुनद जैसे दोऊ रंग रता ।
अग्र अली सीतापति शोभा को करि सकै अता ॥१५९

कहा कहों सुमुखी सलोनी वनि रही सिया स्याम की ।
नेह की पालक सदा दायक प्रणत विश्राम की ॥
श्री जनक नृप नन्दनी रघुवर प्रिया सुख कन्दनी ।
जगवन्दनी छवि गुण भरी बलिर गई इस नाम की ॥

शीश पर मौरी मनोहर चन्द्रिका छवि धाम की ।
भाग की भाजन भली भाविक जनों के काम की ॥
प्राण की जीवन जरी सी जानकी प्रिय राम की ।
देखिकै छवि बिक गई ज्ञाना अली बिन दाम की ॥१६०

परी मेरे सिया बनरे की बान । चतुराई की खान ॥
चितवनि बान कमान भोंह सजि मारत तकि २ तान ।
अलकैं कुटिल कटीली मुख पर चमकै मनहु कृपान ॥
करि कतलान प्रान युवतिन के नयन चढ़े खरसान ।
जब हेरत मुसुकाय मोरि मुख देत फेरि जिय दान ॥
अलवेली छवि छैल छबीलो उपमा कहँ नही आन ।
ज्ञाना अलि बलिहारि बना पर वारि बचन तन प्रान ॥१६१

भूषण मन में नाहिन भावत ।
सीता भीत पीय अँग परसत ऋषि पतनी की सुधि जब आवत॥
जम्बूनद गुहि असित पाट सों नाना भाँतिन स्वकर बनावत।
कुसुम कटाव कंचुकी सारी कुंकुम कुचन सु दोष जनावत ॥
पद्म पानि पद चित्र महावर पाँति तम्बूल कज्जल छवि पावत ।
सहज सुभग वैदेही अँग२ अग्रस्वामि यहि भाँति रिझावत॥१६२

आज इन दोउन पै बलि जैये ।
स्याम गौर गलबाह दिये हैं यह छवि दृगन बसैये ॥
तिरछे तकनि हँसनि मृदु बोलनि लखि सुनि हिय हुलसैये ।
अग्रअली इन मृदु मूरति को हिय बिच कुंज बसैये ॥१६३

रघुबर जेंवत जानि एक सखि अँचल दै हँसि बोली जू ।
सुनहु लाल तुम काके जाये सत्य कहो सब खोली जू ॥
सुनहु प्रिया हम नृप दशरथ के जासु सुयश श्रुति गावै जू ।
भूपति गौर स्याम तुम लालन हम कैसे पतियावै जू ॥
सुनहु चतुरि हम स्याम न होते को श्रृंगार रस ज्यावै जू ।
हमरे श्रीजनकललली रस की रस बिन बोले पिय आये जू ॥
कहहु कमल मकरन्द मधुर हित भँवरहि कौन बुलावै जू ।
रामचरण सुनि मरम मधुररस सब सखियाँ मुसुकावै जू ॥१६४
सुनिये श्री रसिकराय रघुनन्दन रीति प्रीति रसगारी जू ।
तुम तो स्याम स्वामिनि मम गोरी यह अचरज अतिभारी जू ॥
जो पै लाल आप रुचि होवै तौ हम बात बिचारी जू ।
कछुक काल मिथिला में रहिये होइ नागरि सुकुमारी जू ॥
श्री लक्ष्मीनिधि के महलों में रहिहौ रूप उज्यारी जू ।
मन भावती टहल प्रभु करिहौ श्रीसिद्धि की अनुहारी जू ॥
तव प्रभु गौर बदन तुम पैहौ सिय स्वामिनि अनुहारी जू ।
हँसि २ कहत परस्पर दम्पति कामदेन्द्र बलिहारी जू ॥१६५

तुम सकुचत कश चित्त चोर दुलहा राम लला ।
जेंवो ब्यंजन रुचिर हमारो व्यंग बचन सुनिमोर ॥
तुम तो स्याम काम छवि लाजै मातु पिता कैसे गोर ।
गारि ससुर पुर सुनि रघुनन्दन हँसैं सु लखिमुख मोर ॥
कृपा निवास हरषि सखि गावै जुरि२ सिया जुकि ओर॥१६६

राम में छवो रसन की छटा ।
बचन मधुर अरुमाधुरि मूरति तुव रबि रस कोजटा ॥
रुचि कारक लावण्य लवण रस तीष तेज रिपु डटा ।
बाहर भीतर अमल करत जो इहै अमल रस ठटा ॥
प्रभु यश तीत अभागी नाही को है अति अटपटा ।
जैसे मधु में सब रस छाये मधु अमृत से सटा ।
'मधुवाता' इति श्रुति में सोमधु बहुत भाँति से बटा ॥
रस से मोद मोद से जीवन महँ रसिकन अश अटा ।
महादेव नीके जानत जिन राम राम नित रटा ॥१६७

अचवन करत राम सिय प्यारी ।
स्यामा पान लिये कर ठाढ़ी रामा लिये जल झारी ॥
चन्द्रवती खर्चा दर्पन लिये चन्द्रकला सुकुमारी ।
सुभगा लिये वागो प्रीतम को सहजा लिये सिय सारी ॥
करि अचवन बैठे सुख आसन सकल जनन सुखकारी ।
राम सखे बलि २ दम्पति छबि सुन्दर बदन निहारी ॥१६८

सखियन बीरी सरस सम्हारी ।
नागर दल सुकपूर चुना कुटि सुख प्रद लौंग सुपारी ॥
दालचिनी सुचुनी वर मेवा सुघर समय अनुसारी ।
मनकी जानि स्याम कर दीन्हीं स्कर खवावत प्यारी ॥
अधर दशन रसना की उपमा खोजि २ मति हारी ।
कृपा निवाश अली सियपिय की अधरामृत अधिकारी ॥१६९

बीर तुम धीर मुनीशन गाये, आज सखियन हाथ ठगाये ॥
सुनियत मारि ताड़का पापिनि ऋषियन शोक भगाये ।
दलि मारीच सुबाहु सहित दल तिहुपुर सुयश जगाये ॥
शिला नारि भइ परसि चरण रज गयो सुहाग मँगाये ।
सियकर कंकण छूटन नाहीं बातन मनहिं पगाये ॥
जनि सकुचाहु प्राण धन जीवन सुनि हँसि कण्ठ लगाये ।
ज्ञाना अलि सरहज की बातैं सुनि २ अति मन भाये ॥१७०क

कहां लैकै जैहो राम ये जुलमी नैना ॥
नैनन मारि बेकारि भई दइ जबहि दियो हँसि सैना ।
चयन कहाँ पैहो राम ये जुलमी नैना ॥
जो जनती दृग दृग न मिलैती यह पथ ऐती हैना ।
जतन कौन लइहौ राम ये जुलमी नैना ॥
अन्तर होत मोद मरनो भला जीनो उचित अहैना ।
जहर विष खैहौ राम ये जुलमी नैना ॥१७०ख

ललन ससुरारि छाँड़ि कँह जैहों यह सुख कतहुँन पैहौ ।
शाशु शशुर सारी सरहज सब मिथिला विरह सतैहौ ॥
मानि ननद नाते ननदोई फिरि विधुबदन दिखैहौ ।
प्रमदावन भूलेहु जनि रघुवर निजकर पतिया पठैहौ ॥
जो तुम साँच अवध नृपनन्दन साँच कहो कब ऐहौ ।
ज्ञाना अलि सब सफल मनोरथ जब हँसि कण्ठ लगैहौ ॥१७१

बसंत पंचमी

आज बसन्त पंचमी पूजा श्रीरघुबर की बधाई ॥
कनक कलस सजि भरि धरि शिर पर आम बोर जब ल्याई ।
चोवा चन्दन और अरगजा मोतियन चौक पुराई ॥
रतन जटित पिचकारी कर गहि केसरि रंग भराई ।
तकि २ मारत श्री रघुबर को अबिर गुलाल उड़ाई ॥
श्री रघुबर सिंहासन बैठे निरखि-निरखि सुखपाई ।
छोड़ब छिरकब भरव परस्पर ऐसी खेल मचाई ॥
नवल बसन्त नवल मोरन बन नवल-नवल मन भाई ।
अग्रदास गावहिं श्री रघुबर फगुवा परम्पद पाई ॥१७२

डफ बाजी जनक दुलारी की ।
चहुँदिशि सखी जड़ाउ छड़ी लिये पिचकाकर अवधबिहारी की ॥
मारा मार मची कुंजन में, छाइ अबिर अंधियारी की ।
यह छबि देखि मगन सुर मुनि भये अग्रअली बलिहारी की ॥१७३

थिरकत आवै लखो गोरिया ।
लाला भागि चलो यहि औसर न चलिहैं बरजोरिया ॥
लपटि झपटि गहि एक एकन कहँ दश२ करै होरि होरिया ।
कोविद नारि गई रानी ढिग फगुवा देवो तब छोरिया ॥१७४

होरी जनक लली संग खेलत राजकुमार ।
अबिर उड़ावत धूम मचावत गावत राग धमार ॥

मलि गुलाल मुख चूमि लेत हँसि अवध छयल दिलदार।
मोहनि अली प्रेम मैं दोउ सुधि बुधि दीन बिसार ॥१७५

रंग डारो न मो पै धनु धारि लाल ॥
जो मोरि सारि पै रंग परैगो तौ तोहि देउंगि गारि लाल ॥
तुम्हरे सँग रघुवंशि छैल सब मोंहिं सँग सखियाँ हजारिलाल ॥
रामप्रसाद श्रीसिया प्रसाद तें कबहुँ नहीं मैं हारिलाल ॥१७६

पिय लखु आलियाँ फागु रस माती ॥
मति मानो अबला अति चपला भरिहैं सकल करामाती।
ठहरिय छिनक टरिय जिन इत ते जुटि जैहैं पाँति के पाँती ॥
व्यंग सुबचन सुनाई हँसि २ नारि बनैहैं भलि भाँती।
अजु चहो कुशल तो छाड़ो रघुनन्द (कहि) प्रेमभरी मुसुकाती।१७७

रसिया को नारि बनाउगी।
कटि लहँगा उरमाह कंचुकी चुनरी शीश उढाउँगी ॥
गाल गुलाल हगन में अंजन बिन्दी भाल लगाउँगी।
सियाअली ताली बजाय कर स्वामिनि निकट नचाउँगी॥१७८

नव नागरि बाल बने रसिया।
हग अंजन खंजन रतनारे तकनि तीर बांकी गंसिया ॥
वेंदी भाल बिशाल विराजै नथ वेशर लटकन लसिया।
कंचन कुँवरि स्याम तन सारी घुँघट पट मुख छवि शशिया ॥१७९

वाह २ रे अवध नृपति छोरी।
खूब बनी नव बधू दुलहिया घूँघट पट किन खोलोरी ॥

स्यामा वाम सुरूप वती तुम दुलह तुम्हारे कोभोरी ।
चटक चुनरि वर छींट को लँहगो नथ वेशर तिय मणि होरी ॥
वेंदी भाल विशाल नयनि सिन्दूर मांग दृग आँजोरी ।
सियजू चरण पड़ो बर पैंहौ नर भूषण पिय चित्त चोरी ॥
लक्ष्मीनिधि सों तोहि ब्याहिहों जो तुम चित्त चाहो सोरी ।
यह शौन्दर्य निरखि जग को है जो नहि तुमने मोह्योरी ॥१८०

भीने रहो रँग भीने रहो दोउ ।
यह रंग भीनी छबि अखियन की प्रीतम नित २ देते रहो ॥
आप रँगो रंग डारो हमन को हमसे भी रँग लेते रहो ।
सिया अली यह रंग की बधाई मोहि मुख चुम्बन देते रहो ॥१८१

अबके बसन्त अधिक बनि आयो राघव खेलत होरी हो ।
खेलय बहुत सदैव अवधपुर यह सुख कबहुँ न पायो हो ॥
और वेर बहुतै सखि मिलि २ मारति भर पिचकारी हो ।
अबके खेल सरोवर सन्मुख कहि न जाय छबि न्यारी हो ॥
चोवा चन्दन अतर अरगजा नाना रंग अबीर हो ।
केशरि कुम्कुम कीच मची मनो वरषत भादौ नीर हो ॥
चंग मृदंग उपंग खंजरी मधुरे सुर शहनाई हो ।
जीतत जबहि नायका नायक सहचरि उठत बजाई हो ॥
कोउ सखि सुचि श्लाघी प्रीतम को कोउ सीता गुन गावैहो ।
दशरथ जनक दुहूँ मिलि प्यारी गारी देहि दिवावै हो ॥
यह छबि निरखि सुमन सुर वर्षत उचरत जै रघुराई हो ।

सीता राम फागु रँग राते अग्र अली बलि जाई हो ॥१८२

राग जैतश्री- खेलत राम रघुपुरी रुचि सो बहुभातिन सुखदाईहो।
इत जानकी युवति मण्डल में उत सोभीत सँग भाई हो।
चँवर छत्र लिये धुजा पताका रचना रुचिर बनाई हो॥
सवै स्वाँग को सौज सची है जैसे निघट न जाई हो।
बाजे बजन लगे दुहुँ दिशि ते गावत गारि सुहाई हो॥
मनहु द्विरद छूटे मद माते लरत परस्पर धाई हो।
केशरि वारि कुम्कुमा भरि २ छुटत छिछ पिचकारी हो॥
प्रेरीत पवन मनहु पावस ऋतु छन वर्षत पुरवाई हो।
चोवा चन्दन छल बल करिके प्रीतम मुख लपटाई हो॥
राजिव नैन लेत जव बदलो तव सिय शैन सुहाई हो।
चारुशिला रुख धाइ अली इक छल करि पिय धरि लाई हो॥
हा हा किये तवै भल छुटि हौ कैं सीता शिर नाई हो।
मृग मद मलय अबीर सुरभि सखि अजिरन कीच मचाईहो॥
उमड़ चल्यौ अरगजा पनारनि वीथिन नदी बहाई हो।
कृस्न अगर सों भरे चह वचा धूप धूम नभ छाई हो॥
सौंधो ल रि महोदधि मानो पुरजन प्रीति कराई हो।
भरति भरावति कुँवरि कुवर रस होरी कहि किलकाई हो॥
मनु मघवा धुनि व्यापि रही सव उठत मदन मन झाईहो।
परव रोटा वीरिन में पंछी मिस के हाथ दिवाई हो॥
रवान लगे उड़ि गई चिरोंजी हँसि करताल बजाई हो।

खम्भ २ प्रतिविम्ब स्याम के जहँ तहँ देत दिखाई हो ॥
कुश ध्वज कुँवरि भरति भ्रम सों जब तब हँसि करत खिलाईहो।
पलटे पकरे जाइ शत्रुहन कज्जल आँख अँजाई हो ॥
करत सबै भामिनि मन भायो नारि वेष वनवाई हो ।
सिय जू की हौं दाशि वदो तो तौही लेहु छुड़ाई हो ॥
रंग रँगे खेलत अंग अँगन जनकसुता रघुराई हो।
रीझि सुमन वर्षत सुर संघट दिवि दुन्दुभी बजाई हो ॥
जाल रंध्र निरखत सुख जननी आनन्द सिन्धु बढ़ाई हो ।
तन धन प्राण करत न्यौछावरि वारत बहुत वधाई हो ॥
बीच कियो कौशल्या रानी फगुआ गोद भराई हो ।
सीताराम विनोद भाग पर अग्रअली बलि जाई हो ॥१८३

रघुकुल वधू झरोखे झांकै राघो खेलैं होरी हो ।
भरत परस्पर सुधि नहिं पैयत को प्रीतम को गोरी हो ॥
जहँ तहँ राम जानकी सन्मुख लाघव कही न जाई हो ।
केशर कुम्कुम कीच मची हैं वर्षत घन पिचकाई हो ॥
नभ बिमान गन थकित रहे हैं सुर वनिता सब गावै हो ।
पुष्प वृष्टि करि जै जै उचरैं प्रमुदित द्वन्द मचावैं हो ॥
केलि कुलाहल कौतुक देखैं पुरवासी बड़भागी हो ।
सीताराम स्वरूप हृदय धरि अग्रअली अनुरागी हो ॥१८४

चलोरि २ सजनी पिय संग खेलैं होरी ।
अवीर गुलाल रँग केशरी सजोरी गोरी ॥

नये २ रंग आज रसिक विहारी संग ।
सजि कै समाज उर उमंग न थोरी मोरी ॥
काल्ही तो बचायो प्यारी पियने भिजाय सारी ।
आज तो नचाऊँ याको देखो जोरा जोरी सोरी ॥
हेमा हरषानी चारुशीला जू की वानी मानी ।
शुभगा सयानी सारी सखिन समाज जोरी ॥
सुन्दरी सुलोचना सलोनी क्षेमा वरारोहा ।
पद्दुम सुमन्धा लियो अगर अबीर रोरी ॥
लक्ष्मणा ललित नाम सकल गुणन धाम ।
सुखमा अपार जाकी उपमा रमा सी कोरी ॥
जनक किशोरी संग सखिन मचायो रंग ।
पिय को रिझायो ज्ञाना अली कटि पट छोरी ॥१८५

जानकी खेलन होरी पिय संग चली ॥
अपने २ भवन से निकली उर सोहै चम्पाकली ।
श्रुति कीरति उर्मिला माण्डवी चारों जनकलली ॥
राम लखन रिपुदवन भरत की जोरीं बनि हैं भलीं ।
सिय जु के छूटि गुलाल मूठि भरि राघो के पिचका चली ॥
रमकि झमकि पिय के सन्मुख होइ मुख भरि रोरि मली ।
दुहुँ दिशि ते रँग वर्षन लागे कुम्कुम छाइ गली ॥
राजा दशरथ कौशल्या झरोखन दृग सुख लेत भली ।
सीताराम विनोद फाग में वलि २ अग्र अली ॥१८६

सीताराम विनोद फाग को निरखि सखी बलिहारी ॥
जग भूषण निर्दूषण जोड़ी राजत अवध बिहारी ।
सुन्दर वर रघुवीर धीर अति शोभा निधि सुकुमारी ॥
चारुशिला विमलादि अली गन मध्य सीय छबि धारी ।
श्रुति कीरति उरमिला माण्डवी यूथ २ लिय प्यारी ॥
अपनी अपनी टोल खड़ी सब रंगन साज सम्हारी ।
प्रीतम स्याम सुजान संग लिय सखा समाज सुधारी ॥
खेलत रंग उमंग अंग २ हार जीत चित्त धारी ।
चंचल चपल चहुँ दिशि सखि गन सखा स्याम दिय गारी ॥
धूम मची खेलन में सो छबि कहि २ सारद हारी ।
अग्रअली उर वशो अहोनिशि शील सरासन धारी ॥१८७

रघुनन्दन खेलत होरी ।

विपुल सखिन सँग जनकदन्दनी बन्यो सखा हरि ओरी ॥ फाग मची बहु बाजन गाजन होत सोर चहुँ ओरी- लसै सब सुन्दर जोरी ॥ कुंकुम कीच मची सयू तट लाल भये जल धारा । वर्षहिं रंग देवतिय नाचहिं काहू पट न सम्हारा- अंग सब रंगन बोरी ॥ राम सखा ललकारि अग्र बढ्यो इत सखियन करि जोरी । भरत लखन रिपुदवन लाल को धरि ल्याई निज ओरि- करहिं मन भावत गोरी ॥ भूषण बसन उतारि लीन्ह सखि निज भूषण पहिराई । रामचरण सखि छाँड़ि दीन्ह तब सियजू कि जीत कहाई,

भई जै जनक किशोरी ॥१८८

तुम तो नित रारि मचाओ जबै जस अवसर पावो।
आज तुम्हैं धरि के रघुनन्दन मुख भरि रंग लगाऊँ,
छीन लेउं करते पिचकारी तव सिय सखी कहाउं,
भली विधि नाच नचाऊँ॥ आज तुम्हैं धरि के
रघुनन्दन सुन्दरि रूप बनाऊं। लै जैहों मिथिलेश लली
ढिग पिय कहि पाय पराऊँ, चूक सब माफ कराऊँ॥
चूरी चूनरि लखन लाल को सेन्दुर युत पहिराऊँ,
श्री रामचरण करि तुरत दिखाऊँ तव सिय सखी कहाऊँ,
जोपै कहु भागि न जाओ ॥१८९॥

सँइयाँ से खेलत होरी हो झुलनि वालि गोरी ॥
बहुत दिनन में पायो अकेली लाल पकरि भरि कोरि हो॥
अंजन दृगन लगाय मधुर हँसि मसलि कपोलनि रोरि हो।
मधुर अली मन के भायो कियो मुख चूमत तृण तोरी हो॥१९०

मोपै पिचकारी न घालो छयल। जो हमपर पिचकारी घलिहौ
तो तुम्हे लै भिजाउगी पहल॥ श्री जनकलली जुकि-
आयसु लैकै आऊँ इतै रहो ठाढ़े गयल।
अग्रअली रघुनन्दन प्यारे देखौं मैं आज तुम्हारो फयल॥१९१

रंग होरी होरी होरी लाल।
यह जोरी छवि लखि भइ निहाल॥
तन स्याम गौर चहुँ ओर बाल,

घन दामिनि पहिरे कनक माल ॥
सिय सुभग गाल पिय दै गुलाल, जनु कनक लता पूजत तमाल।
चितवत दोउ युगल प्रिया कृपाल, जनु होरी बाटत दैगुलाल।१६२

होनि हो सो हो सखी री पिय की पगिया भिजाउगी।
पगिया भिजाउगी नीके खिझाउगी अपनी ओर बचाउगी ॥
खंजन दृग अंजन शिर सैंदुर नक वेशर पहिराउगी।
वैंदी भाल कपोलन रोरी कुंकुम मारि भगाउगी ॥
कर कंकरण चूरी पग नूपुर शिर सों चुनरि उढ़ाउगी।
एतेहूं पर जो हारि न मानै तौ धरि संग नचाउगी ॥
अविर गुलाल लालमुख मीड़ो धरि गलभुज सुख पाउगी।
ज्ञाना अलि जो औसर चूकौं तौ फिर फिर पछताउगी ॥१६३

कहाँ पायो है लाल गुलाल गाल।
जनि सकुचाहु साँचि कहो कृपाल ॥
कित छैल फैल चतुराई, गई किधों सान्ता ने सान्ति स्वभाव दई।
मति बिबशभई अतिमोदलई, सबबिसरिगयो फरफन्द ख्याल।क०
हमसे इत निठुराई करत हौ, उत्त भगनी वश पाँव धरतहौ।
देखत सन्त स्वभाव भरतहौ, उघरि गयो अब हिय को हाल ॥
रमतराम सबही सन प्यारो, अर्थ समर्थ सुवेद विचारो।
व्यर्थ वैन नहि होय हमारो, चैनऐन मुद दैन माल ॥क०॥
जो हम रमत सबहि सन प्यारी, तो तुमहूँ निज लेहु बिचारी।
सुनि२ गगन मगन सुरनारी, वरषि सुमन लखि भई निहाल।क०

रस रसि प्रीतम प्राण पियारे, सियस्वामिनि अँसन भुज धारे,
युगल विहारिणि तन मन बारे कनकलता लिपटी तमाल ॥१६५

ठुमरी देखु अलि केलि तरंगन में ।

आज भिजाय रिझाय भाव भरि पिय अंग रंगन में,
कालि लाल मुख मसलि गुलालन अबला विकल भई तनहालन।
करकत नैन अबीर हमारे सो रिस अंगन में ॥
सज्यो सौज सारी सुकुमारिन श्रीकमला विमलादिक नारिन।
चारुशिला सुभगा सिय सहचरि भरी रंग जंगन में ॥
कोउ मृदंग डफ वीण बजावै सारंगि सितार लय गावै ।
कोउ तिय पिय धरि नाच नचावै सखियन संगन में ॥
सजि कर कंज रंग पिचकारी ज्ञाना अलि श्री जनकदुलारी ।
मृदु मुसुकाइ चलाइ लाल पर ललकि उमंगन में ॥१६५

सुनि आइरी आज मैं तो होरि की भनक । रंग डारोंगि वाहिपै जिनतोरयो है धनुष ॥ झूमि२ उठि दौरि महल ते केशरि रँग कुंकुमा कनक । खेलत राम जाकी के संग होति मधुर पिच कारि कि सनक ॥ कोइ कहै रँग डारो लखन पै कोइ कहै या खिलारी पै तनक । कोइ उमगि मुख मलत लाल के कोई हँसत दै दै तारिकि ठनक ॥ अति आनन्द होत यहि पुर में उड़त गुलाल अगर कि सलक । तुलसिदास धनि २ राजा दशरथ धनि २ हैं मिथिलेश जनक ॥१६६

अनुजन संख लिये होरी खेलत राम उदार ॥गृह२ ते वनितावनि

आई कीन्हें विविध श्रृंगार ।। कुमर अगर अबीर गुलालन संग लिये बहु भार।। उत रघुबीर सखा बनि आये रंग भरे पिच-कार।। एक ओर मिथिलेश कुमारी उत अवधेश कुमार।।खेलहि फाग भ्रुकुटि दोउ दिशिते काहुहि सुधि न सम्हार । वर्षहि रंग अबीर गगन धुनि बाजन गान अपार ।। एक सखी होइ सखा रामढिग आइ, 'सुनहु मत सार' ।रामचरन मुख चूमि-परानी हँसि रहे राजकुमार ।।१६७

डफबाजी जनक दुलारी की ।।डफ बा०।। नवसतसातसजी सब सखियाँ नवयोजन मतवारी की ।।ड०।। झपटि लपटि सब सखा भगाये धूम मचाई गारी की ।।ड०।। राजकुमार को पकड़ि मगाई जीत लिखाई प्यारी की ।।ड०।। कृपानिवास रसीली अँखियाँ रसिक जनन रसकारी की ।।१६८।।

परी मेरो स्याम सनेही मेरे बश अनुराग। अधरामृत दै गल भुज मेलो खेलोंगी सँग फाग ।।कुचनि गुलाल लाल पर डारों उरझौं मनमथ जाग ।। नैनन की शैनन सौं छिरकों प्रगट करौं सब लाग।। पिय के शीश उढ़ाउब चूंदरि मैं जुधरों शिर पाग । लाल नचाऊँ अपने आगे में गाऊँ हँसि राग ।। जोइ जोइ कह्यों कियो सिय प्यारी भारी भरि है सुहाग । कृपा निवास महासुख निरखत सखियाँ सराहत भाग ।।१६९

सँइयाँ जाने न पै हौ डारो न मो पर रंग । श्री मिथिलेश लली जु कि अलि सब, आनि जुरी यक संग ।। सुनि सँक-

चाय रँमाय दृगन दृग बोलत बचन उमंग। काह करेगी विपुल नारि लगि जाओ हमारे अंग ॥ कण्ठ लगाय भिजाय भिजे रंग बाढ्यो परस्पर जंग । युगल प्रिया यह फाग अनोखी लखि रति पति मद भंग ॥२००

स्याम मुख रंग कि बूंदढरी। मानहु काम कसौटी ऊपर कंचन की कस परी ॥ अलकैं चुवैं मनो घन माला रस अनुराग भरी । कृपा निवास अलीगण अँखिया सियवर रूप अरी।२०१

खम्माच-होरि के खिलारि रंग डारो न रसिया ॥ चुनरि भिजोइ मोरि चटक छबीलि किय कहां लों सहूंगि तेरी नित नई हँसिया ॥ धरि झकझोरि मोरि मोति लर तोरि प्यारे ऐसि बरजोरि रोरि भरत दृगन मोरि, ताहूँपै मारत तकि चितवनि गँसिया ॥ शुभगा सलोनि चारुशिला अतिशीला अली। सौज तयारि सारि कियो है सुन्यारी न्यारी ॥ तहाँ जीत पावो तब जानू में तुम्हारो बल, ज्ञाना अली खेलैं पिय प्यारी छबि लसिया ॥२०२

मोसों नाहक्क करि बरजोरी लालन होरी खेली हो ॥ में कोउ हेतु अकेलि गली गइधरि कर करहि मरोरी हो । विनय बरजि तरजो नहि मानैसान्यो मुख में रोरी हो ॥ लाज नहीगुरू जन पुर जन तोहि अव में काह करौंरी हो। कोविद कवि छवि होरि नही वह २ है भोरा भोरी हो ॥२०३

होरि के दिनन में रोष नकरिये मानो जि मानो मेरि बात। लखिन सुनी यहरीति अली हम खेलतमें खुनसात।। विनय करत रघुलाल साँवरो पद गहि हाहा खात। सींचिय सुघर शिरोमनि सियजू पिय पादप कुमिल्हात ।। मृदु हँसि हेरनि वंक विलोकनि शंकनि पिय कदरात। सनमुख आवत हमसों अलियुग जोरत कर जलजात ।। सखि मुख पियकी विनय सुनत सिय मृदु वच कहि मुसुकात। रसिक अली रस रंग भरी पिचकारि दई पिय गात ।।२०४

सखीरी काह कहूमें अवधकेछैला छली। जात रही सर्यू जल भरने मिलि गये वीच गली। लैकर कंज गुलालमजें से मेरेमुख में मली। मधुर अली महबूब बली सो कछु नहि जोरचली।।२०५

सारी भीज गई पिय डारों न मोपर रंग।
सीत भरी कम्पत तन मेरो दीजै गलभुज संग ।।
लखि ललचाय ललकि लै प्यारी खेलत नवल उमंग।
रसिक अली सुन्दर मनि रघुवर बाजत मृदु रव चंग ।।२०६

री वह पीरो न जानत अँखियन भरत अबीर ।।
मुसुकावत धरि नरम कलाई खैचत धरि २ चीर ।।
झकझोरत मोहि पकरि २ अँग मारत तकि दृग तीर ।।
मोहनि छिन २ अंक भरत है कसि कसि के वेपीर ।।२०७

साँवरो होरी खेलन आवै।

रँग पिचकारि छिपाय बसन में औचक आनि भिजावै ॥
या अवधेश को छयल नयो सखि कर गहि कम्प बढ़ावैं।
रसिक पिया भरि आँख अबीरन अटपट बैन सुनावैं ॥२०८

खेलैं राघोजि तियन विच होरी हो।
लाल गुलाल भरे तन सोहत मरकत शैल अरुन परस्योरी ॥
बिथुरे कच आनन छबि राजत चन्द चहूँ दिशि राहु फिरयोरी।
कर कंचन पिचका अस सोहत जनु अहि मनि मुख लै निकस्योरी।
पकरि तियन मुख रंग मलत जनु राहु अतन लै शशि झगरयोरी।
रसिक अली यह रूप सुधानिधि जानि अछै मन मीन फँस्योरी ॥२०९

पिचकारि तिहारि रंगदार लला जू जनि डारो मोपै।
सी उपजावत कम्प बढ़ावत रहत न देह सम्हार ॥
अमित हजारा से छबि छूटत कसकत हृदय हमार।
पिया दृग चोट चलावैं सुन्दर राजकुमार ॥२१०

झूलन विहार

बिजुरी चमकै घन घहराय।
तरवर टपकत कोकिल कूकत पपिहा रटनि नेह उमगाय ॥
पावस छटा अटा चढ़ि निरखत जनक लली रघुराय।
रसिकअली तड़पत जब बादर प्यारि पिय उर लपटाय ॥२११

झूलन पधारोजि हमारो राज।
कारि पिरि घटा घन उमड़ि घुमड़ि आये बिजुली चमकत आज॥
सुनि बानी रस सानी प्यारे चले झुलन के काज।
कृपा निवास अली की जीवन गरे लाग तजि लाज ॥२१२

प्यारी झूलन पधरो झुकि आइ बदरा।
सजि भूषण वसन आँखियन कजरा॥
मान कीजिये काहे को सुख लीजिये अली।
तुमतो परम सयानी मिथिलेश की लली।
देखो अवध ललान पिया आगेहि खड़े।
रस वर्षै सुधा सुखि जब पायन परे ॥२१३

चले दोउ झूलान को हुलसान॥
पिय प्यारी के नित्य झुलान है नहिं कछु काल प्रमान।
पाय प्रदोष काल सखियन सँग गान तान झमकान॥
पहुँचे झूलान कुंज सुहावन फूले विविध लतान।
मोरन के यूथैं बहु बिचरैं नाचत पंख फुलान॥
जाति जाति के पक्षी बोलै भरि रहे शब्द दिशान।
चहुँदिशि मणि मय महल विराजैं मध्य विचित्र वितान॥
तामधि सुन्दर परचो हिंडोला मोतिन के लहरान।
तापर बैठे दियगल बांही प्यारी पिय रस दान॥
नाना यन्त्र लिये सखि गावति लेत स्वरीली तान।

दोउ दिशि ते सखि झुलावन लागी छबि लखि हिय उमड़ान॥
दोउ मिलि झूलत हैं रसमाते अग्र निरखि बलि जान।
करि झूलन रस सिन्धु मगन दोउ चले ब्यारि अस्थान ॥२१४

जनकपुर लागत तीज सुहाई ।
रँग रँगीली अतिहि छबीली सब मिलि झूलन आई ॥
सावन मन भावन पिय प्यारो अवनी सहज सुहाई ।
पावन कुंज पुंज सुख बरषत करषत मन बरषाई ॥
कंचन खम्भ जड़ित डाढ़ी नग विविध विचित्र बनाई ।
रेशम डोरि कोरि बनि आई चहुँ दिशि जलज जराई ।
लाले बाल लाल रंग भीनो लालन लाल लड़ाई ॥
श्री प्रसाद, प्यारी कर गहिकै मंगल गाई चढ़ाई ।
चारुशिला, पिय नैन इशारन झूलन प्रथम सिखाई ॥
झोका देत लेत सुख पिय को मन्द मन्द मुसुकाई ।
लली पाग लाल शिर चुनरी लाली अति मन भाई ॥
उमगेउ रंग अनंग परस्पर मैन मलार जमाई ।
गावहि समर रंग भरि भामिनि कोकिल कण्ड लजाई ॥
ठाकुर हमरे लाल मन मोहन अंगन रूप लुनाई ।
ठकुराइन मिथिलेश लाड़िली शील सनेह भलाई ॥
होड़ा होड़ी मच्यो है हिडोला शोभा कहि न शिराई ।
अग्र अली प्रिय दम्पति झूलत जनक लली रघुराई ॥२१५

हिडोरने झूलत जनक दुलारी।
सखि इक ओर किशोर रूपनिधि विविध भाँति तन सारी ॥
कंचन खम्भ पाटि पडुली डाडी विद्रुम दुति न्यारी।
पद्मराग मडुवा वेलन पन्ना आड़इन्द्र मनि भारी ॥
धाम निकट आराम हरित द्रुम क्रीडत तहँ सुकुमारी।
गावत मिलि हैं हरषि हिडोरा कल कण्ठत उन हारी ॥
करन अन्दोल बोल चंचल चल जनु दामिनि छबि हारी।
साट लिये सजनी डरपावति नाम लेहु पिय प्यारी ॥
नाम न लियो सरूप सूचि कर देखि ईषु धनु धारी।
सर्म स्वेद विन्दु निरखि वदन पर अग्रअली बलिहारी ॥२१६

तिताला-हिडोले झूलत सिय महरानी।
श्रुति कीरति उर्मिला माण्डवी चारुशिला गुणखानी ॥
रच्यो हिंडोरा नाम लिवावति चतुर सखी मुसुकानी।
सिया जू सकुचिरही नहिं बोलति अग्रअली मनमानी ॥२१७

हिंडोरे झूलत सीताराम।
श्याम गौर अभिराम मनोहर रतिपति के चित चोरे ॥
नील पीत वर वसन लसत तन उठत सुगन्ध झकोरे।
सहचरि हरषि झुलावति गावति छवि निरखत तृण तोरे ॥
मन्द २ मुसुकात छबीलो रमकत थोरे थोरे।
.वि सुकुमारि अग्र की स्वामिनि डरपि गहति पट छोरे ॥२१८

देखो राम बने जनु सावना । सिया लगि रंग बढ़ावना ॥
सियवर की मोतिन की माला सो वगपांति लजावना ।
इन्द्र धनुष सिन्दूर सिया को घनरस को वरषावना ॥
पछिलो पवन सुसन्त विचारो स्याम घटा प्रगटावना ।
रवि विधु कवि बुध मिलि के लागे रस की झरी लगावना ॥
सिय जू उत्तर दिदि की दामिनि राम स्वरूप लखावना ।
चमकि झमकि सो निज दाशन के अन्तर जोति जगावना ॥
ब्रह्मदेव हूं यह सावन को करत निरन्तर ध्यावना ।
सियाराम जू जन्म २ की जिय की जरनि मिटावना ॥२१६

सिया रसिक विहारी झूलै ।

सावन कुंज सरित सरयू तट वन प्रमोद मुद झूलै ॥
नख शिख सुमन शृंगार सजोरी अवध चन्द्र चन्द्राननि गोरी ।
निवछावरि रति मदन करोरी तेहि सम एक न तूलैं ॥
सिय झूलैं पिय झूमि झुलावैं निरखि २ छवि वलि२ जावैं ।
मन भावै कटि लचकनि मचकनि हरषि हरति हिय शूलैं ॥
नागरि वयस शिरोमणि सारी सिय प्यारी सब राजकुमारी ।
लिये सौज ठाढी वहु ओरनि सेवा सुख अनु कूलैं ॥
मृगनयनी कल कोकिल वयनी गज गामिनि सब रतिमद दवनी ।
ज्ञाना अलि सब निमिकुल छवनी छिन २ छवि लखि फूलै॥२२०

धीरे धीरे झुलो पिय प्यारी सुकुमारी मोरी ॥

विजुलि चमक घन गरजत तरजत सोरी ।
मधुर हुलन हिंय हुलसत चित्त चोरी ॥
ललना नवेली चारुशीला अतिशीला अलि ।
यन्त्रन बजावैं गावैं नृत्यत सु थेई थेई ॥
शुभगा सलोनी छबि निरखत तृण तोरी ।
सुखमा लपेटी नृप जनक की बेटी भली ॥
सब गुण जेटी विधि स्वकर समेटी छवि ।
ज्ञाना अलि झूलै झुकि झमकि दृगन जोरी ॥२२१

झूलै नवल हिडोले, पिय प्यारे संग बनि ठनि स्यामा ॥
रतन जड़ित अति रुचिर हिडोला तामैं,
रचना अनेक द्रुम सावन के कुंज बीच,
बाजत मृदंग आदि गावत समूह सखि,
कोटि काम रति वामा ॥
सीतल सुगन्ध मन्द वायू के प्रसंग तहाँ,
घेरि घेरि आवत बलाहक के वृन्द नान्हि,
नान्हि बुदियन वरिषन के समै छवि,
अति शोभित सियरामा ॥
शीश को नवाइ ईश को मनाइ कै मुनीश,
वार बार विनय करत कर जोरि जोरि,
नृपति किशोर व किशोरी जू आनन्द रहैं,

यह हमार मन कामा ॥२२२

रागमलार-नृपनन्दन मिथिलेश किशोरि अलबेली झूलाझूलैं।
पाँयन पाँय करन कर जोरे अरस परस रस हूलैं ॥
मरकत कनक चर्म मन सिज के गोहन रंग अतूलैं ।
रसिक अली अद्भुत रस लीला निरखि २ चित्त फूलैं ॥२२३

लिये झूलैं छबीले सुधर धनियाँ ।
घुंघट बीच अनोखी चितवनि बदन सरोज कसे तनिया ।
मन्द हँसनि मुख चन्द सुधारस जनकलली रघुकुल मनिया ।
शीलमणी नव रँग रँगीली जोर बनी सुखद दनिया ॥२२४

झूलत राम राजिव नैन ॥
जनक जा सन्मुख विराजति तड़ित ज्यों घन गैन ।
अतिहिं झूलत मनहिं फूलत रहसि तोषति मैन ॥
लाल के उर लागि शोभा सुखकि रेखै ऐन ।
परसपर अनुराग दोऊ बदत मधुरे बैन ।
जाल रंध्रनि निरखि बनिता अग्र उर सुख दैन ॥२२५

झूलो नित्त यहि झूलन हों, मोरा बालम जी ।
आप झुलो व झुलावहु प्यारी हिय हिय में रस फूलन हो ॥
झमकि झुलावै अलिगन गावै चितवन की अनुकूलन हो ।
जुलुफनि जाल अरुझि मुसुकावै फहरनि अंग दुकूलन हो ॥
स्याम सुरभि वन सघन सुहावै दामिनि छबि घन तूलन हो ।
यह शौन्दर्य निरखि सुख बनिता हिय नव नेह सुमूलन हो॥२२६

पिय लखु सावन सुवहरिया ।
धीर समीर नीर वरषत सत वशि गये सबुज सहरिया ॥
झूला झूलिये भूलिये मति पिय करिये नित कचहरिया ।
कोविद मोद विनोद महा लखु जल थल वहत डहरिया॥२२७
प्यारी झूलन पधारो पिय रस वरषै ।
तुम दामिनि वरण पिय घन दरषै ॥
यह लखन सरस रस दृग तरषै ।
दै सबहिं ललित सुख विधु करषै ॥
चली लली जू झूलन सुनि सखि बचसै ।
लखि नवल प्रिया के बड़ भाग फल सै ॥२२८
झूलत सिया राजिव नैन ।
रतन जड़ित हिंडोलना सखि राम सुख के ऐन ॥
स्याम अंग पर गौर झलकत दामिनी घन गैन ।
मैथिली रघुबीर शोभा निरखि लाजत मैन ॥
नाम पिय को लेहु नागरि सब सखिन मन चैन ।
जानकी नहि लेत मुख सो देति लोचन शैन ॥
परस पर झूलत झूलावत वदत मधुरे वयन ।
अवधपुर नित केलि दम्पति अग्र आनन्द दैन ॥२२९
हिंडोरना में काँई झूलो राज । सिया प्यारी सुकुमारी ॥
अगर चन्दन को बनो हिंडोरा मलया गिरि को पटा ।
रेशम डोरि पवन पुरवइया वह सावन को घटा ॥